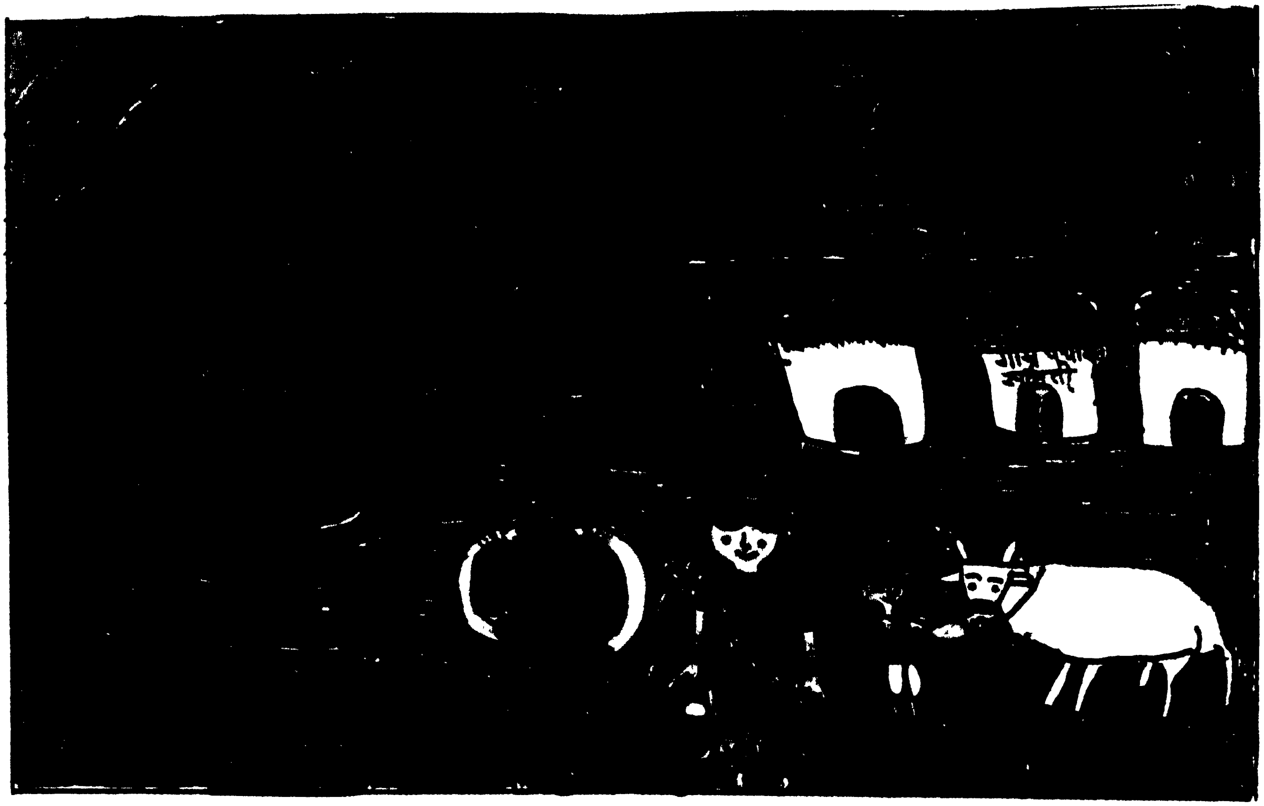


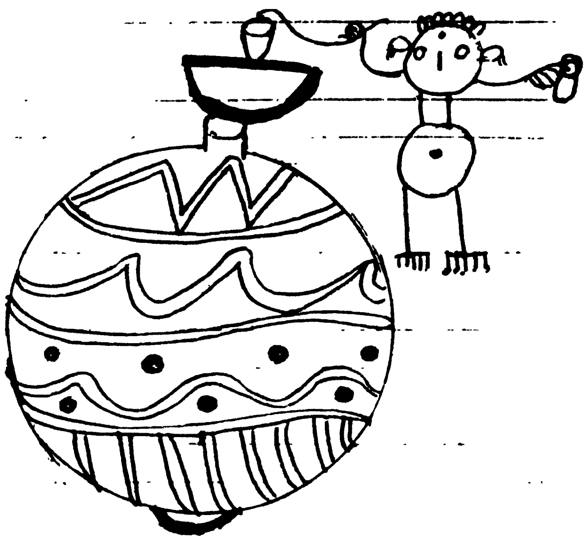
श्वेता श्रीवास्त्री, पाँचवीं, होशंगाबाद, म.प्र.



[redacted]

[redacted]

[redacted]



वन्दना आठोड़िया, दूसरी, उन्हैल, उज्जैन, म.प्र.

126 वें अंक में.

विशेष

कहानियाँ

कविताएँ

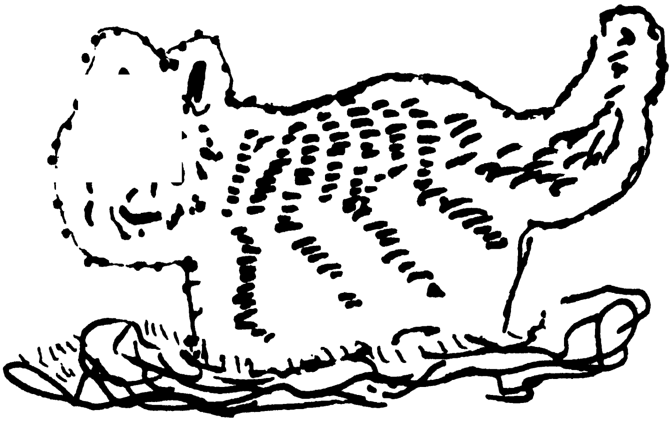
हर बार की तरह

और यह भी

एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है।
प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल
और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरा पन्ना

बिल्ली और चूहा



रमेश कुमार, सातवीं, बारव्ही, बैतूल, म.प्र.

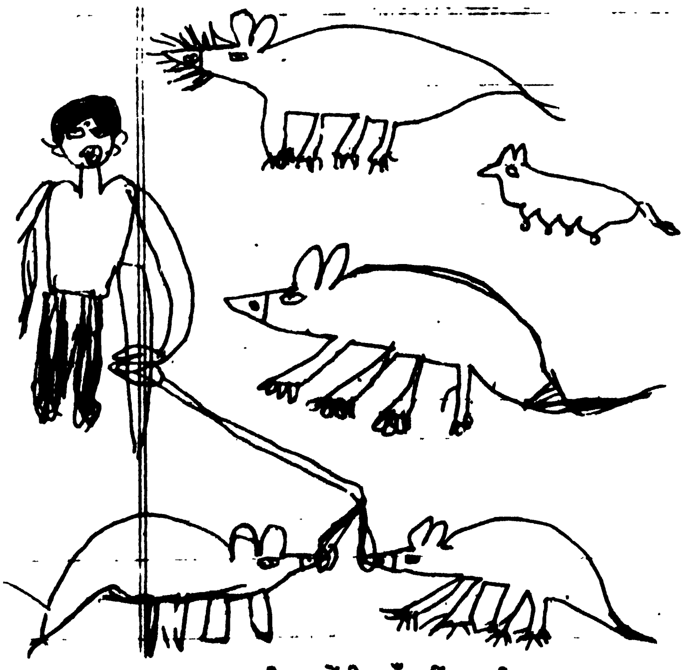
बिल्ली चूहे खेल रहे थे ताश
बीच में आ पड़ी पैसों की बात
चूहे ने बिल्ली से माँगा
एक रुपया उधार
बिल्ली ने चूहे के मुँह पर
फेंक दिया फिर ताश
बिल्ली ने चूहे की उड़ा दी खिल्ली
चूहा बोला बहुत बुरी है बिल्ली
अब न खेलूँगा तेरे साथ
बीच में आ पड़ी पैसों की बात
बिल्ली चूहे खेल रहे थे ताश।

● उमा, सातवीं, भिलाई, म.प्र.

चूहे की करामात

देखो भई चूहे की करामात
कितने पैने हैं इसके दाँत
सभी के कपड़े चिन्दी कर दे
कभी न रहे ये शांन्त
कितनी करता है ये शैतानी
बस करता अपनी मनमानी
खाए सभी के ये अनाज
देखो भई चूहे की करामात
इससे दर्ज़ी सदा घबराता
अपने कपड़े इससे बचाता
जब दर्ज़ी से हो जाए भूल
तब चूहा भी न पाए चूक
ये चिन्दी करदे कपड़े तमाम
देखो भई चूहे की करामात

● मधूकान्त पाण्डे, नौवीं, भोपाल, म.प्र.



● रीता गोंडी, पाँचवीं, भुन्सी, शाजापुर, म.प्र.

मेरा पन्ना

ठण्ड का मौसम

चारों तरफ़ है कोहरा छाया
गद्दे पल्ली साथ में लेकर
ठण्ड का मौसम है आया

दिन छोटे अब लम्बी रात
हो जाए कपड़ों की बात

सबने पहनी हैं बनियानें
कानों पर हैं मफ़लर ताने

सब्ज़ी मण्डी में दिखते हैं
गोभी, गन्ना, सेम, मटर
पालक, चौरई और टमाटर

धुआँ उगलना मुँह का काम
बहती नाक सबेरे शाम

सुनहरी धूप तन को है भाती
पानी की ठण्डाई रास न आती

सुबह-सुबह का मौसम
चारों ओर सन्नाटे का साया
ठण्ड का मौसम है आया

हरी ज़मीन पर पड़ जाते हैं
हर सुबह मोती से दाने

किट-किट किट-किट
दाँत बिचारे गाते हैं ठण्डी के गाने

पके अमरूद लगे हुए हैं पेड़ पर
बेर मीठे खेतों की मेड़ पर

आँवला, नीबू भी इस
मौसम में हैं आते

पका, पपीता लोग
बड़े शौक से खाते

कुछ ले जाए
कुछ दे जाए
ठण्ड का मौसम जब आए।

● निशांत बिश्वकर्मा, दसवीं,
करेली, नरसिंहपुर, म.प्र.

ट्यूशन

आज हर तरफ़ ट्यूशन की बहार है
हर छात्र को चढ़ा इसी का बुख़ार है
स्कूल कॉलेज की पढ़ाई अब बेकार है
ट्यूशन का लगा हर तरफ़ बाज़ार है
घर घर बन गया ट्यूशन का स्कूल
बढ़ गया है अब व्यय का फ़ज़ूल
स्कूल की पढ़ाई अब कागज़ पर हो रही है
ट्यूशन के टीचरों की चाँदी ही हो रही है
ट्यूशन का ज़हर अब माथे पे चढ़ आया है
स्कूली शिक्षण तो अब नाम का ही रह गया है

● मनु सोलंकी, राजगढ़, म.प्र.



● अशेष कुन्तल चन्द्राकर, पहली, दुर्ग, म.प्र.

प्यारी पतंग

मेरी प्यारी-प्यारी पतंग तुम अनेकों रंगों से बनी हो
लेकिन तुम आसमान में जा थमी हो
तुम कब कटोगी
सब बच्चे खड़े-खड़े तुम्हारी राह देख रहे हैं
तुम्हें पाने के लिए तरस रहे हैं

● शुभम् काशिव, चौथी, साँवेर, इन्दौर, म.प्र.



पिकनिक

एक बार कक्षा सात के बालक और क्लास टीचर दोपहर के बाद एक ट्रक से बाँध पर गए। बाँध बहुत गहरा था और बाँध से नदी निकलती थी तो नदी में पानी अभी कम था। दो-चार लड़कों ने बाँध की नदी में नहाया। एक बच्चे का एक जूता बहने लगा तो तैरने वाले लड़के ने वह जूता निकाला। और थोड़ी देर में वर्षा होने लगी तो हम लोग विश्राम गृह में रुके और फिर वर्षा रुकी तो हम लोग ट्रक में आए और ट्रक चला। ट्रक में भीड़ थी तो गाते हुए आए और हम लोग लगभग सात बजे घर आ गए और आज बहुत आनन्द आया।

● विजय जैन



● प्रीति राजपूत, दूसरी, लखनऊ, उ.प्र.

ओखली में सिर

मेरे गाँव से लगा हुआ एक पहाड़ी गाँव उसकल्ली है। यह गाँव बैतूल रोड पर है। इस गाँव के पूर्व में गंजाल नदी बहती है। इसी गंजाल नदी के तट पर एक दर्शनीय स्थान भी है जिसे लोग आला ओखली के नाम से जानते हैं।

इसी आला ओखली के दक्षिण गंजाल तट पर भीम बाटी है और पाग्या पाठा नामक स्थान भी है। पौराणिक किंवदन्ती है कि इस जगह पाण्डवों ने अपने खाने के लिए बाटी (गाँकर) बनाई थी। यह बाटी के आकार का पत्थर क़रीबन बीस क्विंटल वज़न का तो होगा ही। यह नदी के मध्य में स्थित है।

इसी तरह आला ओखली के बारे में भी कहा जाता है कि क्वाँर (आश्विन) के महीने में विजया दशमी के अवसर पर देवतागण (लोग) नहाने के लिए आते हैं तथा इस ओखल में से जो असल देवता (अच्छा आदमी) होता है, वह पार हो जाता है। वर्ना इसी में फँसा रह जाता है।

मैं अपने पापा के साथ 1994 में इस स्थान पर गई थी। एक आदमी को देवता आया और वह बड़ी ज़ोर से किलकारी मारकर उस ओखल की तरफ़ गया। उसमें से निकलने के लिए अपना सिर फँसा लिया। फिर क्या था बेचारे देवता तो रफ़ूचक्कर हो गए और वह महाशय ओखल में फँसे रह गए। फिर लोगों ने बड़ी कठिनाई से ओखल तोड़कर उनका सिर बाहर निकाला।

● ज्योति उपरारिया, आठवीं, भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.

उगता सूरज

उगता है सूरज पूरब से
मिटाता है अँधियारा

दिखाता है पथ सबको
सारी दुनिया में फैलाता उजियारा

दोपहर में सिर पर आता
सब पर आग बरसाता

अगर हो जाती उसी समय वर्षा
तो प्रभाव अपना न दिखा पाता

शाम को पश्चिम की ओर चला जाता
लालिमा लिए यह सबको भाता

धीरे-धीरे डूबने के बहाने
चाँद को बुलाने चला जाता

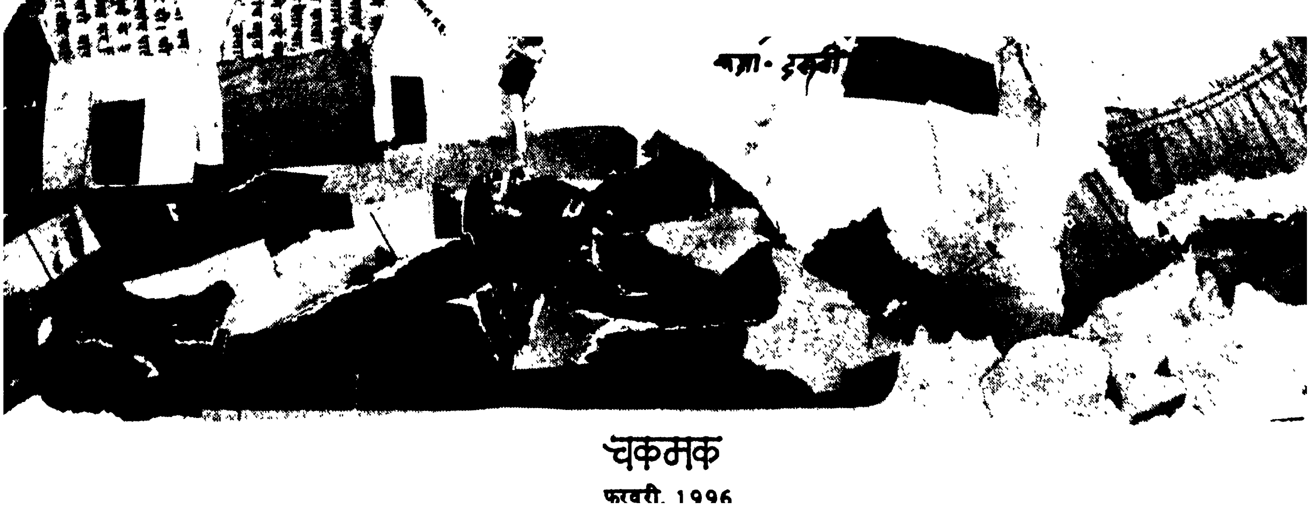
● राज अभिषेक, बारह वर्ष, डुमराँव, बिहार



अभिजीत सिंह परिहार, चौथी, बालाघाट, म.प्र

उठ! गुड्डा उठ।

उठ! गुड्डा उठ।
सबेरा हो गया, उठ
देखो आकाश को
लालिमा छा रही।
चहचहा रही चिड़ीयां
चुग्गा के [illegible]
उठ! गुड्डा उठ।
देखो पर्वत को
कैसे नीला दिख रही
उठ! गुड्डा उठ।





चमकीले तारे

आसमान में चमके तारे
सबको लगते कितने प्यारे

ख़ूब देखते हैं उनको
फिर भी मन न भरता

कितने सुन्दर कितने प्यारे
सबका मन मोह लेते हैं

बार-बार मन करता है
आसमान पर जाऊँ
और सारे तारे तोड़ लाऊँ

रात में सबको दिखते तारे
दिन में ग़ायब हो जाते सारे

आसमान में चमके तारे
सबको लगते कितने प्यारे

चमकीले-चमकीले होते
सुन्दर से भी सुन्दर होते

इन तारों की गिनती अनेक
कोई इन्हें नहीं गिन पाता

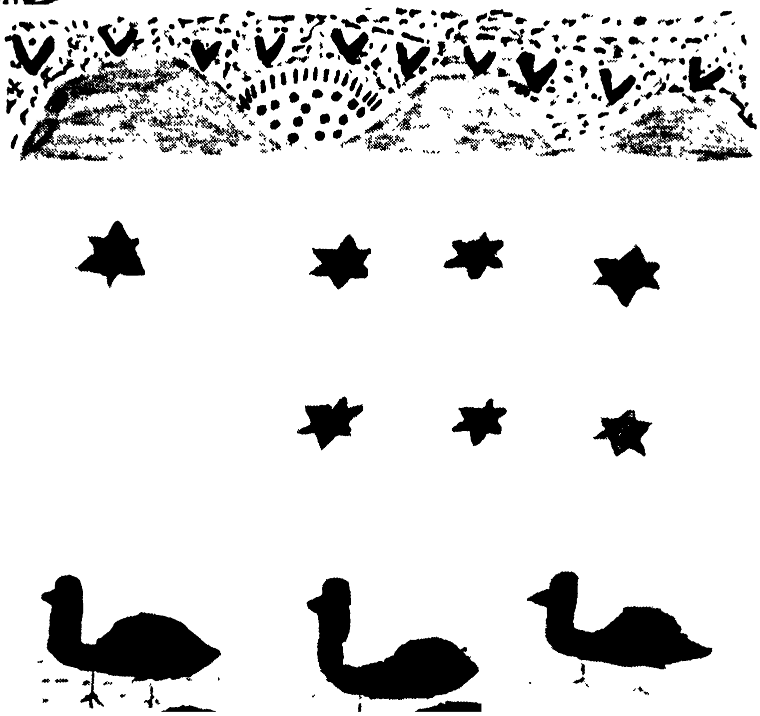
इतने सुन्दर दिखते हैं
कोई रचना नहीं कर पाता

कोई इन्हें देख ले तो
देखता ही रह जाता

समय बीत जाता है
पर पता नहीं चल पाता

आसमान में चमके तारे
सबको लगते कितने प्यारे

● लोकेन्द्र सिंह सोलंकी, तेरह वर्ष, भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.



गौरव डाकले, छठवीं, धार, म.प्र.

ग़लतफहमी

बात उन दिनों की है जब मैं ढाई वर्ष का था। तब मुझे यह मालूम नहीं था कि स्कूल में भरती क्यों करते हैं। और मेरी नानी का ऑपरेशन होने वाला था तो मामा जी और मेरे पापा कहते थे कि इन्हें अस्पताल में भरती कराना पड़ेगा। इसलिए मैं समझ गया था कि अस्पताल में बीमार को भरती करते हैं। मैं डरता था कि वहाँ सुई लगाते हैं। एक बार मेरी मम्मी हमारी पड़ोसन से बात कर रही थी कि इसे स्कूल में भरती कब करोगे। यह सुनकर बहुत घबराहट हुई कि अब मुझे अस्पताल जैसी सुई लगेगी। आज मैं चौदह साल का हूँ और दसवीं में पढ़ता हूँ। आज भी जब मैं वो बात सोचता हूँ तो मुझे बहुत हँसी आती है। और सोचता हूँ बच्चे कितने मासूम और भोले होते हैं।

● सुमीत राठौर, चौदह वर्ष, उज्जैन, म.प्र.



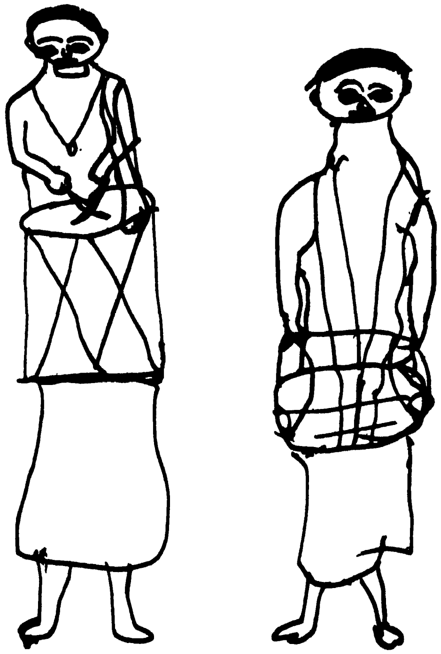
दिपाली सोनी, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म.प्र.



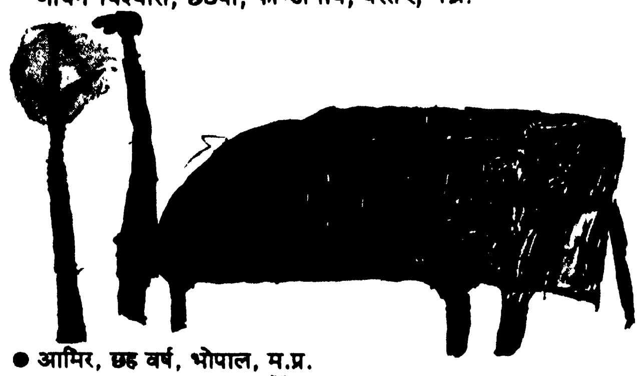
● टीना हिल्लाल, सातवीं धार, म. प्र.



जीवन विश्वास, छठवीं, कोण्डागाँव, बस्तर, म.प्र.



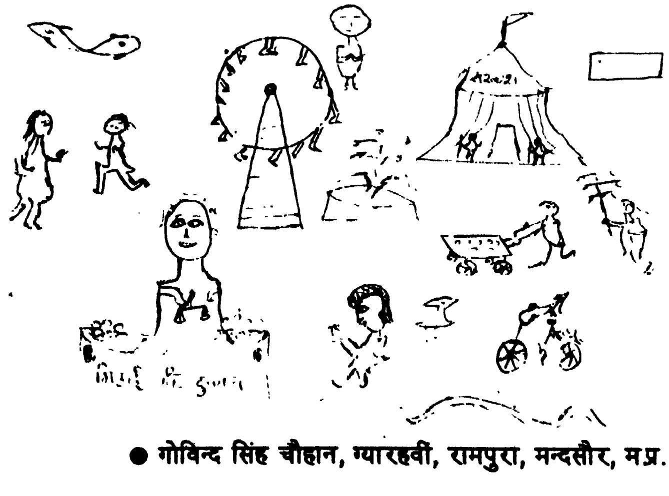
● नितिन के. डेविड, छह वर्ष, केरल



● आमिर, छह वर्ष, भोपाल, म.प्र.



● मुकेश कुमार, छठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म.प्र.



● गोविन्द सिंह चौहान, ग्यारहवीं, रामपुरा, मन्दसौर, म.प्र.

चंदा की शरारत

❑ मालती बसन्त

सौर-मण्डल नामक एक गाँव था। सूरज दादा उस गाँव के स्कूल में अध्यापक थे। उनकी कक्षा में नौ बच्चे थे। आठ लड़के और एक लड़की।

धरती नामक यह लड़की सब बच्चों से पढ़ने में अधिक तेज़ थी। इसलिए अपनी इस होनहार छात्रा को सूरज दादा भी बहुत चाहते थे।

धरती का एक छोटा भाई भी था – चंदा। उम्र में छोटा होने के कारण वह स्कूल नहीं जाता था। किन्तु वह अपनी धरती दीदी के साथ कक्षा में बैठ जाता और शरारतें करता रहता।

धरती दीदी अपने चंदा भैया से परेशान हो जाती। दूसरे बच्चों को तंग न करे इसलिए वह उसे अपने आसपास ही रहने देती।

एक दिन सूरज दादा ब्लैकबोर्ड पर शब्दों के अर्थ लिखवा रहे थे। बच्चों की तरफ़ पीठ थी उनकी। धरती भी सिर झुकाए लिखने में तल्लीन थी। तभी उसे अपने सामने कुछ छाया-सी महसूस हुई, उसने अपना सिर उठाकर देखा तो उसे सूरज दादा दिखाई नहीं दिए। उनके सामने, टेबिल पर उनका चश्मा लगाकर चंदा मुस्कुरा रहा था। धरती अपने चंदा भैया की यह शरारत देख शर्मिन्दा हो गई। सब बच्चे भी नटखट चंदा की हँसी उड़ाने लगे।

धरती दीदी ने चंदा को ज़ोरदार डाँट लगाई, "उतरो नीचे, पढ़ना-लिखना आता नहीं, मास्टर बनने चले हो।"

चंदा रोता-बिसूरता अपने घर चल दिया।

धरती ने अपने गुरु जी सूरज दादा से अपने चंदा भैया की शरारत के लिए माफ़ी माँगी ।

सूरज दादा नटखट चंदा की शरारत देख मुस्कुरा उठे।

धरती की जान में जान आई, और वह फिर लिखने में तल्लीन हो गई। ❑❑



चित्र : हूताराम अधिकारी

बच्चों के भी हैं हक़।



क्या तुम जानते हो कि हम सब भारत के नागरिक हैं? और नागरिक होने के नाते हमारे कुछ बुनियादी अधिकार भी हैं? हमारे संविधान में अन्य बातों के अलावा इन अधिकारों के बारे में लिखा है। संविधान यानी एक ऐसा दस्तावेज़ जिसमें देश के कामकाज देश के नियम, कानून, देश में रहने वालों के हक़, देश के प्रति और एक-दूसरे के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में लिखा गया है। हर आज़ाद देश का एक ऐसा संविधान होता है।

यह तो हुई किसी एक देश और उसके संविधान की बात। लेकिन पूरी दुनिया के स्तर पर भी एक संस्था है, जिसने दुनिया भर के लोगों के लिए कुछ बुनियादी हक़ तय किए हैं। इस संस्था का नाम है - संयुक्त राष्ट्र संघ। यह 24 अक्टूबर, 1945 को बनाई गई थी। उन्हीं दिनों दूसरा विश्वयुद्ध ख़त्म हुआ था, और दुनिया के सभी आज़ाद देशों को यह चिन्ता थी कि कहीं फिर से ऐसा युद्ध न छिड़ जाए। इसलिए इस संघ ने दुनिया में शान्ति और सुरक्षा के लिए एक लिखित दस्तावेज़ तैयार किया। यह सभी सदस्य देशों की सहमति से बना था।

दस्तावेज़ में लिखी बातों को अंजाम देने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने कई अलग-अलग समितियाँ तथा कोष भी बनाए हैं। इनमें से एक है संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, जिसे तुम यूनीसेफ़ (अंग्रेज़ी में संक्षिप्त नाम) के नाम से जानते हो। यूनीसेफ़ दुनिया भर में बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा और उनकी उचित देख-रेख के लिए काम करता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ बच्चों के लिए भी उतना ही चिन्तित है जितना बड़ों के लिए। इसी चिन्ता के चलते इस संघ ने अपनी महासभा की 20 नवम्बर, 1959 की बैठक में बच्चों के हक़ों का एक घोषणा-पत्र जारी किया। लम्बे समय के बाद 20 नवम्बर, 1989 को संघ में शामिल देशों ने इस पर अपनी पूरी सहमति दी। इस घोषणा पत्र पर दस्तखत करने वाले देशों में भारत भी शामिल है।

यह घोषणा-पत्र तीन भागों में है। ये तीनों भाग 54 अनुच्छेदों (पैराग्राफ़) में बँटे हैं। इनमें बच्चों की रक्षा, उनके विकास आदि के लिए कुछ बातों पर सहमति ज़ाहिर की गई है। इन बातों को तय करते वक़्त यह ख्याल रखा गया है कि प्रत्येक देश की परम्परा और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए बच्चों के जीने के हालातों में सुधार किए जाएँ। इस दस्तावेज़ में दुनिया भर के बच्चों के लिए कुछ

बुनियादी हक़ों का ज़िक्र भी किया गया है। इनमें से कुछ खास-खास यहाँ दिए जा रहे हैं-

1. प्रत्येक बच्चे को जीने का हक़ है।
2. उसे उचित देखभाल और खाने-पीने का अधिकार है।
3. यह माना गया है कि बच्चे के व्यक्तित्व का पूरा और उचित विकास परिवार के बीच ही हो सकता है। ऐसी जगह जहाँ खुशी, प्रेम और आपसी समझ-बूझ हो। इसलिए उसे परिवार में रहने का हक़ है।
4. प्रत्येक बच्चे को स्वास्थ्य सुविधाएँ पाने का अधिकार है।
5. उसे पढ़ाई-लिखाई के बराबर मौक़े पाने का हक़ है।
6. प्रत्येक बच्चे को उससे जुड़े हर मुद्दे पर अपनी बात कहने का हक़ है।
7. प्रत्येक बच्चे को अपनी बात कहने और जताने की छूट का हक़ है। इसमें वह बिना किसी सीमा के मौखिक, लिखित या छपे रूप में, कला रूप में या अपनी पसन्द के किसी भी अन्य तरीक़े से सभी तरह की जानकारी और विचार माँग सकता है और दे भी सकता है।
8. प्रत्येक बच्चे को आराम करने, खेलने और अपनी उम्र के हिसाब से मनोरंजन करने और सांस्कृतिक तथा कलात्मक गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने का हक़ है।
9. बच्चों को शान्तिपूर्ण तरीक़े से इकट्ठा होने और अपना संगठन बनाने का हक़ है।
10. प्रत्येक बच्चे को आर्थिक और शारीरिक शोषण से बचने का पूरा हक़ है।
11. हर बच्चे को यह अधिकार है कि उसकी निजी ज़िन्दगी, घर-परिवार और पत्र-व्यवहार पर ग़ैर क़ानूनी ढंग से हस्तक्षेप न हो।
12. युद्ध, बाढ़, सूखा, महामारी, भूकम्प जैसी मुसीबतों के समय सबसे पहले राहत पाने का अधिकार है।
13. प्रत्येक बच्चे को अपने हक़ों और भलाई के लिए क़ानूनी तौर पर हिफ़ाज़त का हक़ है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस घोषणा के साथ-साथ कई देशों ने अपने स्तर पर बच्चों के लिए कुछ बातें तय की हैं। जैसे 22 अगस्त 1974 को भारत सरकार ने एक संकल्प लिया था। इसमें बच्चों की भलाई के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाने पर विचार किया गया। विचार-विमर्श के बाद कुछ बातें तय की गईं-

1. देश के बच्चे सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण धरोहर





हैं। उनकी देखभाल और चिन्ता करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

2. बच्चों का पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास हो पाए, यह ख्याल रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसके लिए उन्हें जन्म से पहले और बाद में और बढ़त की पूरी उम्र में पर्याप्त सेवाएँ देना देश और राज्य की नीति होगी।
3. देश के विकास के लिए अलग-अलग कार्यक्रमों को बनाते समय बच्चों, माताओं और विकलाँगों का खास ख्याल रखा जाएगा, यह तय किया गया है। इसमें बच्चों की शिक्षा, ग़रीब बच्चों की देखभाल, कामकाजी और बीमार माताओं की हिफ़ाज़त और विकलाँग बच्चों की देखभाल को प्राथमिकता दी जाएगी।
4. एक राष्ट्रीय बाल बोर्ड बनाया जाएगा जो अलग-अलग ज़रूरी सेवाओं की व्यवस्था, उनकी जाँच-परख और आपसी तालमेल बनाए रखने का काम करेगा।
5. बच्चों की भलाई के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। इनके विकास के लिए अलग-अलग संगठनों, संस्थाओं, न्यासों से हर सम्भव मदद ली जाएगी।
6. इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए राज्य की सरकारें ज़रूरी क़ानूनी या और कोई (प्रशासनिक) सहायता उपलब्ध कराएँगी।
7. इन उद्देश्यों तक पहुँचने में अपनी भागीदारी निभाने के लिए भारत सरकार अपने नागरिकों और स्वयंसेवी संगठनों से भी अनुरोध करती है।

बहरहाल यह तो हुई दस्तावेज़ों में दर्ज अधिकारों और क़ायदों की बात। लेकिन वास्तव में देश, राज्य, नगर या गाँव में बच्चों की क्या स्थिति है? क्या तुम यह जानते हो कि तुम्हारे ये अधिकार या हक़ हैं? क्या सही मायनों में तुम अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में इनका इस्तेमाल कर भी पाते हो? यह सब तो तुम ही ठीक-ठीक बता सकते हो। अपने आसपास नज़र दौड़ाओ, याद करो कि तुम्हें कब-कब कौन से अधिकार मिलते हैं, मिले हैं और कौन से नहीं। हमें भी लिख भेजो। तुम्हारे अनुभव, तुम्हारी आवाज़ हम चकमक में छापेंगे।

फ़िलहाल हमने चकमक के अब तक प्रकाशित 126 अंकों में मेरा पन्ना में छपी तुम्हारी रचनाओं में इसी तरह की एक खोज-पड़ताल की है। कुछ रचनाएँ और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी बाल अधिकार दस्तावेज़ के कुछ अनुच्छेद हम यहाँ सांथ-साथ प्रकाशित कर रहे हैं। इसका उद्देश्य तुम्हें तुम्हारे हक़ों के प्रति सचेत करना तो है ही, साथ ही साथ माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक तथा ऐसे ही अन्य व्यक्तियों का ध्यान इस ओर खींचना भी है।

अनुच्छेद-14

'समझौते में शामिल देश विचारों, अन्तरात्मा और धर्म की आज़ादी के बच्चे के अधिकार सुनिश्चित करेंगे।'

निकोलस बर्न, पाँचवीं, हरदा, म.प्र. का कहना है-

मैं रोज़ स्कूल जाता हूँ। हमारी टीचर पूजा-पाठ वाली हैं, इसलिए मेरा उनके साथ जमता (पटता) नहीं है। वैसे तो मेरा स्कूल मुझे बहुत अच्छा लगता है। दोस्त हैं, अपने यार हैं, मस्ती में स्कूल आता-जाता हूँ।

एक दिन मैं कक्षा में बैठा था। तो हमारी बड़ी मैडम (प्रधानाध्यापिका) कक्षा में आईं। सब बच्चों ने जयहिन्द कहा तो वो बैठ गईं। फिर वो भगवान के बारे में अंट-संट बताने लगीं। तो मैं उठा और मैंने कहा, भगवान मुझे कभी दिखे भी नहीं और आप अपनी ही लगाए जा रही हैं। मैंने यह कहा तो मैडम चिढ़ गईं और मुझे कक्षा से बाहर कर दिया।

दूसरे दिन मैं स्कूल गया तो मैडम ने कहा, "तुम्हारे घर से किसी को बुलाकर तुम्हारी 'टीसी' निकलवाओ।"

(अप्रैल, 1990)



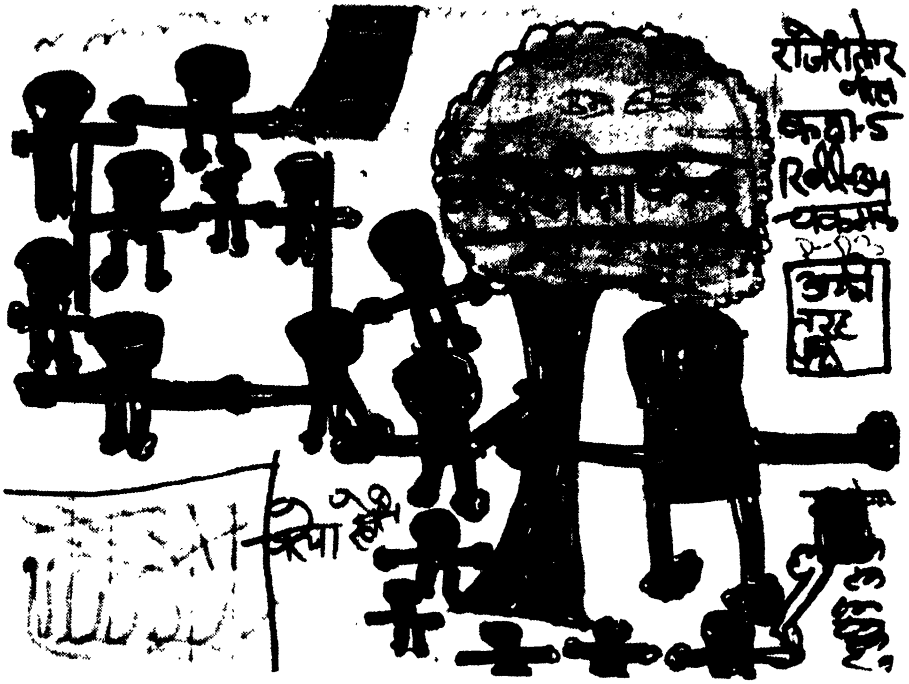
सुबोध कुमार, भादूगाँव, होशंगाबाद, म.प्र.

अनुच्छेद-16

'किसी भी बच्चे की निजता, परिवार, घर और पत्र-व्यवहार पर मनमाने और गैरक़ानूनी ढंग से हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।'

विप्लव उपाध्याय, सातवीं, देवास, म.प्र. का कहना है -

एक बार जब मैं स्कूल गया तो मैंने देखा कि मेरे कुछ दोस्त बीच की माँग निकालकर आए थे।



राजेश तेतरवाल, झुन्झुनु, राजस्थान

वे बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। मैंने भी बीच की माँग निकालना शुरू कर दी। कुछ दिनों बाद ये बात मेरे पापा को मालूम हुई, तो उन्होंने मुझे समझाया कि, बेटा बीच की माँग तो आवारा लड़के निकालते हैं। पर मैंने फिर बीच की माँग निकालना शुरू कर दी। मुझे पापा ने ख़ूब समझाया - ख़ूब समझाया, पर मैं नहीं माना। अन्त में पापा ने मेरी गंजी ही करवा दी।

(जनवरी, 1991)

अनुच्छेद-19

'समझौते में शामिल देश ऐसे सभी उचित क़ानूनी, प्रशासनिक, सामाजिक और शैक्षणिक उपाय करेंगे जिनसे माता-पिता या अन्य किसी व्यक्ति की देख-रेख में रह रहे बच्चों को सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक हिंसा, चोट अथवा अपमान, उपेक्षा अथवा उपेक्षाजनक व्यवहार, दुर्व्यवहार अथवा शोषण से बचाया जा सकेगा।'

शांतिलाल, आठवीं, मानकुण्ड, देवास, म.प्र. का कहना है -

एक दिन मैं स्कूल नहीं गया तो मेरे पापा बोले, क्योंरे स्कूल क्यों नहीं गया। मैंने कहा स्कूल में मेरी पिटाई होती है। एक दिन स्कूल गया, तो मैं घर से, सर ने जो बोला था उसको याद करके नहीं गया। उस दिन भी मेरी पिटाई हुई। जब घर पर मैं पहुँचा और पापा ने सुना कि इसका मन पढ़ाई में नहीं लगता तो पापा ने भी दो-चार चाँटे लगा दिए।

मैं गाँव छोड़कर मामा के यहाँ चला गया। जब मामा ने सुना कि पढ़ाई के डर से भागकर आया हूँ तो मामा ने भी मुझे मारकर भगा दिया।

(जनवरी, 1989)



रमेश कुमार कश्यप, आठवीं, किरारी, बिलासपुर, म.प्र.

अनुच्छेद-23

'मानसिक अथवा शारीरिक रूप से विकलाँग बच्चे को पूर्ण और अच्छी ज़िन्दगी का अधिकार है। विकलाँग बच्चे को विशेष देखभाल पाने का अधिकार है।'

हमारा साथी गोपाल पूरी तरह विकलाँग है। यह पैरों से चल नहीं पाता है। हम सब इधर-उधर फिरते रहते हैं। ये बैठा रहता है। इसकी सरकार कोई सुनाई नहीं कर रही है। गाँव में स्कूल होने के कारण कक्षा पाँच तक पढ़ रहा है। इसके लिए कक्षा छह की क्या व्यवस्था होगी?

कक्षा पाँच के बच्चे, गाँव पंपालिया, राजस्थान
(जुलाई, 1988)

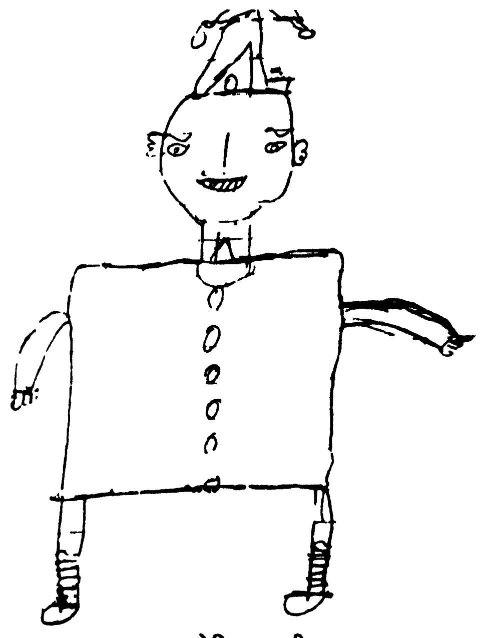
अनुच्छेद-27

1. *हर बच्चे को उसके भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक विकास के लिए समुचित जीवन-स्तर पाने का अधिकार है।*
2. *बच्चे के माता-पिता या उसकी देखभाल का दायित्व सम्भाल रहे व्यक्तियों की ज़िम्मेदारी है कि वे अपनी योग्यताओं और वित्तीय क्षमताओं के अनुरूप, बच्चे के विकास के लिए आवश्यक स्थितियाँ उसे उपलब्ध कराएँ।*

प्रदीप कुमार सेठ, ग्यारहवीं, सीधी, म.प्र. का कहना है -

कुछ दिनों पहले की बात है। रात सात-आठ बजे जैसे ही मैं पढ़ने बैठा, दरवाज़े से आवाज़ आई, 'रोटी दे दो।'

आवाज़ जानी पहचानी थी, क्योंकि यही लड़का कई बार इसी तरह रोटी माँगकर ले जा चुका था। मैं इसके बारे में इतना ही जानता था कि वह माँगता है, और इसी से जी रहा है। मैंने देखा वह उस जनवरी की कड़कड़ाती ठण्ड में सिर्फ़ एक फटी टी-शर्ट पहने था। पैरों में जूते भी थे, ढीले-ढीले से। वह ढीली-ढीली पैंट भी पहने था, जिसे देखने से साफ़ ज़ाहिर होता था कि यह भी माँगी हुई है और जो, इसके नाप की न थी। उसका चेहरा तो गोरा था, पर मैला-सा। बाल भी भूरे-भूरे, उलझे हुए थे। कुल मिलाकर वह नन्हा भिखारी लग रहा था। उसकी उम्र दस साल के लगभग रही होगी। कई दिनों से सोच रहा था, इससे इसके बारे में पूछूँगा। आज अच्छा मौक़ा था। मैंने उससे पहला सवाल किया - "तुम्हारा नाम क्या है?"



रोहित, दूसरी, नागपुर, महाराष्ट्र

"रामदास।" उसने उत्तर में सिर्फ़ अपना नाम लिया था।

"तुम्हारे माँ-बाप कहाँ हैं?" मैंने छूटते ही प्रश्न किया।

"पता नहीं, मर गए।"

"फिर तुम्हें किसने पाला?"

"चाचा-चाची ने।"

"कहाँ हैं वे सब?"

"पता नहीं, कहीं चले गए छोड़कर।"

"अकेले हो?"

"हाँ।"

"कहाँ रहते हो?"

"उस सामने वाली झोपड़ी में।"

"बड़े होकर क्या करोगे?"

"काम।"

"क्या काम?"

"कोई भी जो मिलेगा।"

"अभी काम क्यों नहीं करते?"

"अभी छोटे हैं।"

उसके जवाब में मैं उसे देखने लगा था, फिर पूछा, "यहीं रहोगे या बाहर जाओगे?"

"यहीं रहेंगे। कहाँ जाएँगे?" उसने भी मुझ पर एक सवाल ठोक दिया। इसके बाद मैं चुप

होकर कुछ सोचने लगा। फिर मैंने शाम की बची दो रोटियाँ व सब्ज़ी लाकर दी। उसे कुछ पैसे भी दिए। उसने रोटियाँ ले लीं, पैसे जेब में रखे और चुपचाप चला गया। उसके चेहरे पर बच्चों जैसी मुस्कुराहट थी। मैंने देखा उस झोपड़ी के सामने ऐसे ही बच्चे आग जलाकर ताप रहे थे। वह भी उन्हीं के बीच चला गया।

(कहानी और चित्र अगस्त, 1989)

अनुच्छेद-28

1. 'बच्चों को शिक्षा का अधिकार है और समान अवसर के आधार पर यह सभी को मिलना चाहिए।'

सविता जैन, चौथी, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र. का कहना है -

एक दिन मैंने अपनी मम्मी से कहा, "मम्मी मुझे स्कूल को देरी हो रही है, खाना बना दो।"

मेरी मम्मी बोली, "आज तुझे स्कूल नहीं जाना है, घर का काम करना है।"

मैंने कहा, "मैं तो स्कूल जाऊँगी।"

मम्मी ने मुझे दो चाँटे जमा दिए। इतने में पापाजी घर आए, तो पापा ने पूछा, "क्या हो गया?"

मैंने पापा से कहा, "मम्मी ने मारा है।"

पापा ने पूछा, "क्यों?"

मैंने कहा, "मम्मी कहती हैं, काम करो, स्कूल मत जाओ।"

पापा ने मम्मी से कहा, "तुम्हारा काम तो गया भाड़ में, स्कूल जाने दो।"

मैं खुश होकर स्कूल चली गई।

(अगस्त, 1992)



ाणी पांढरकामे, छठवीं, खड़की, पुणे, महाराष्ट्र



शिखा कहार, चौथी, सुखतवा, होशंगाबाद, म.प्र.

2. 'स्कूल में अनुशासन लागू करने के तरीक़े बच्चे के मन को चोट पहुँचाने वाले न हों। वे मानवीय गरिमा के अनुरूप हों।'

विवेक कुलश्रेष्ठ, सातवीं, ग्वालियर, म.प्र. का कहना है -

एक दिन हमारी कक्षा में गणित के सर ने एक सवाल पूछा। पूरी कक्षा में केवल मैंने ही सही उत्तर दिया। मैं बहुत ख़ुश था कि सर मुझे शाबाशी देंगे। सर मेरे उत्तर से ख़ुश तो हुए पर उन्होंने मुझसे कहा कि चलो सब लड़कों को एक-एक चाँटा लगाओ। मैं डर गया मैंने कहा कि मैं चाँटा नहीं लगा सकता। मुझे मालूम था कि स्कूल के बाहर मुझे सब मिलकर मारेंगे। फिर अपने सहपाठियों को इस बात पर मारना मैं अच्छा भी नहीं समझता था। सो मैंने कह दिया, "सर मैं चाँटा नहीं लगा सकता।"

सर ने लाल-लाल आँखें निकालकर कहा, "अच्छा तू चाँटा नहीं लगा सकता तो आजा मैं लगाना सिखाऊँ।"

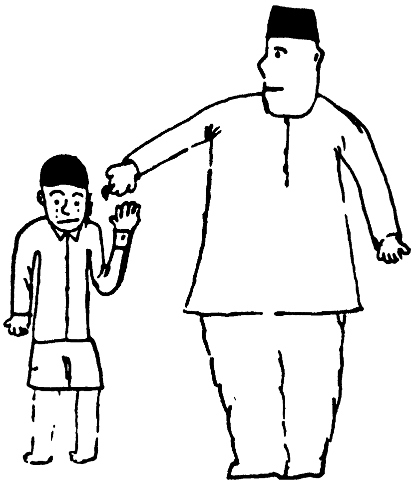
यह कहकर उन्होंने मेरे गाल पर पूरे ज़ोर से थप्पड़ मार दिया। मेरे आँसू निकल पड़े। पूरे दिन मुझे इस बात का दुख होता रहा कि मेरे सही जवाब का इनाम क्या बस यह थप्पड़ ही था?

(कहानी और चित्र नवम्बर-दिसम्बर, 1993)

शंकर ठाकुर, पाँचवीं, पलिया पिपरिया, होशंगाबाद का कहना है

हम स्कूल में कबड्डी खेल रहे थे तो मैं कबड्डी कहने के लिए गया था तो मुझे पटक दिया। मेरा पेन्ट गोबर में खब गया। तो मैं घर पर गया कपड़ा बदलने। घर से स्कूल आया। गुरु जी बोले तुम कहाँ गए थे तो मैंने कहा, मैं कबड्डी खेल रहा था। मेरे कपड़े गोबर में ख़राब हो गए। कपड़े बदलने गया था। गुरु जी ने बहुत मारा और कहा, तुम कहाँ गए थे?

(कहानी और चित्र फ़रवरी, 1989)



अनुच्छेद-31

'आराम करने, खेलने, अपनी उम्र के हिसाब से मनोरंजन करने और सांस्कृतिक तथा कलात्मक गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से भाग लेने का हक़ प्रत्येक बच्चे को है।"

गोपाल पटेल, टिगारिया छोटा, देवास का कहना है -

मन तरसे भाई मन तरसे
बाल मेला जाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
चित्र बनाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
कठपुतली बनाने को मन तरसे

मन तरसे भाई मन तरसे
खेल खेलने को मन तरसे

(जुलाई, 1988)

अनुच्छेद-32

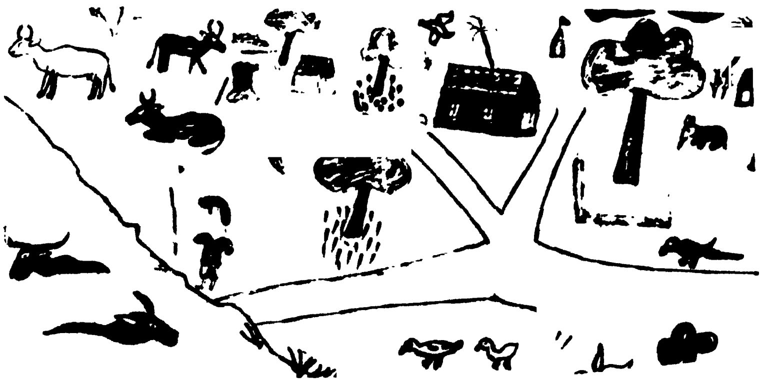
'आर्थिक शोषण और जोखिम भरे अथवा शिक्षा में बाधा डालने वाले कार्यों से बचने का अधिकार प्रत्येक बच्चे को है।'

श्रीराम कोरकू, छींदापानी, केसला, बैतूल, म.प्र. का कहना है -
मैं ढोर चरावे जंगल जात हूँ। घर के ढोर लेके सवेरे रोटी बाँध के जात हूँ। दुपहरिया मैं बैठ के नदिया के पास साथ बारे मोड़ा-मोड़ियों के साथ खात हूँ।

कई बार जंगल में सुअर, साँवर मिल जात हैं। हमारे गाँव की मेंड़ से गोला गट्टू फोड़वे की लेन बँधी है। हम गोला गट्टू बीनवे हे नहीं जात हैं। हमारे गाँव से कुछ जने जात हैं।

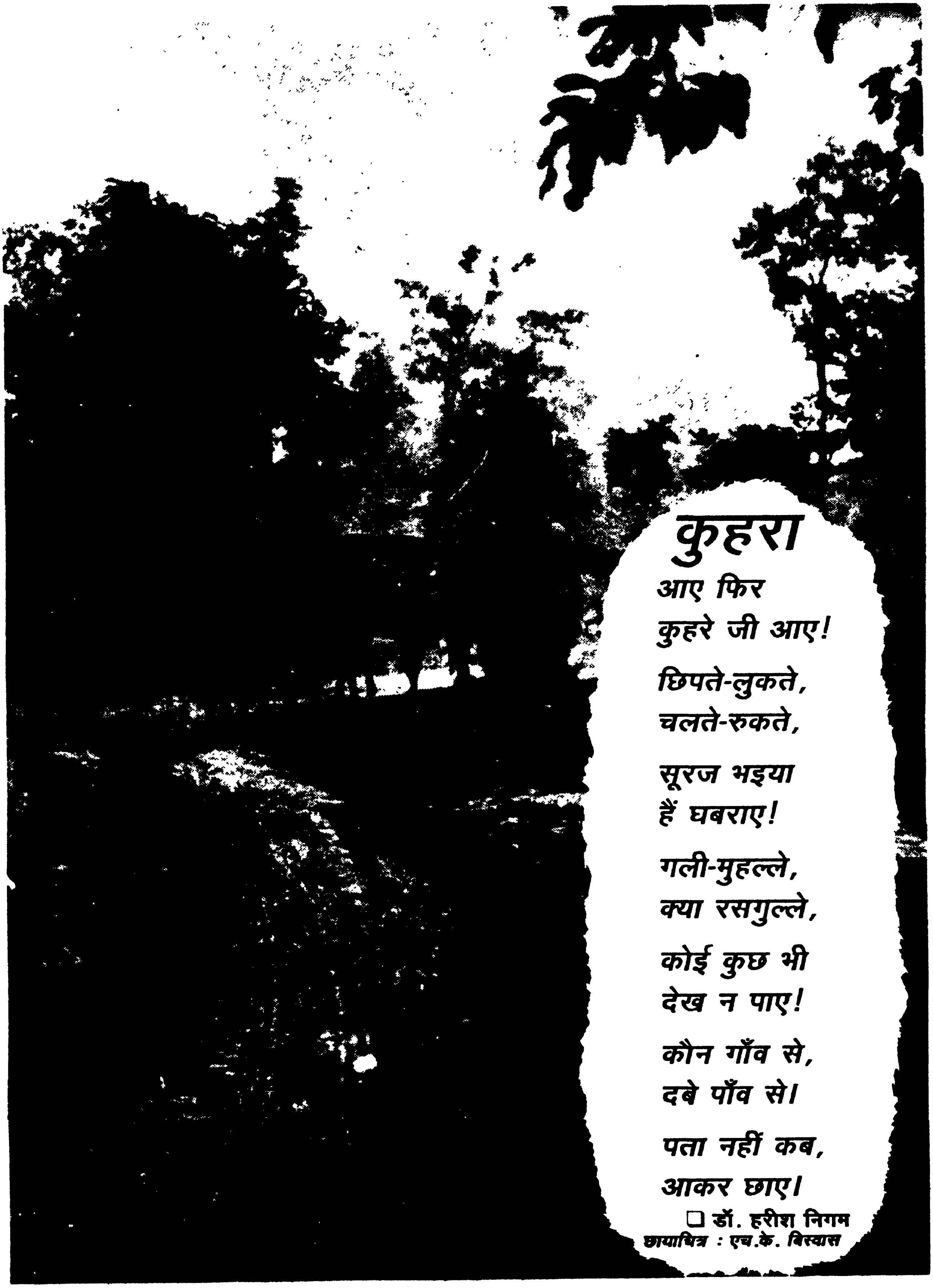
हमारे गाँव में स्कूल है। पर घर से पढ़वे नहीं भेजे। काहेसे कि पढ़वे जैहे तो ढोर कौन चरैहे! गाँव में गंज मोड़ा-मोड़ी हैं। जोड़ के जोड़ मिलके खेलत हैं।

(अप्रैल, 1990)



आनन्द श्रीवास्तव, दसवीं, उथिया, दतिया, म.प्र. (जनवरी, 1991)

प्रस्तुति : राजेश उत्साही
सभी छायाचित्र : के.आर. शर्मा



कुहरा

आए फिर
कुहरे जी आए!

छिपते-लुकते,
चलते-रुकते,

सूरज भइया
हैं घबराए!

गली-मुहल्ले,
क्या रसगुल्ले,

कोई कुछ भी
देख न पाए!

कौन गाँव से,
दबे पाँव से।

पता नहीं कब,
आकर छाए।

❑ डॉ. हरीश निगम

छायाचित्र : एच.के. बिस्वास

पतंग



पतंग उड़ाने का मौसम है। तुम भी उड़ा रहे होगे या उड़ाने का मन तो होता ही होगा। पतंग उड़ाने के लिए जो चीज़ें चाहिए वो हैं पहली तो पतंग, दूसरा मांझा या डोर और तीसरा खुला मैदान या छत। एक और ज़रूरी चीज़ है पतंग उड़ाने के लिए, पतंग उड़ाने का मौसम यानी हवा।

सबसे पहले पतंग की जुगाड़ करना है। एक तो सीधा-सा रास्ता है कि बाज़ार से पतंग ख़रीद ली जाए। लेकिन अगर पतंग उड़ाने से पहले तुम ख़ुद अपनी पतंग बनाओ तो पतंग उड़ाने का मज़ा कुछ और ही होगा।

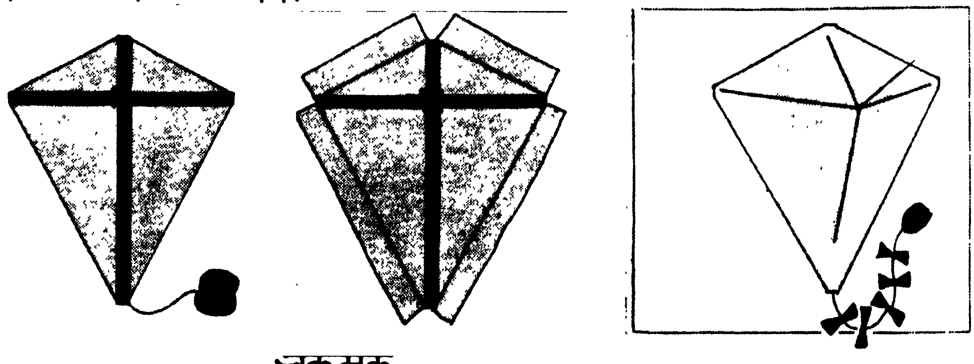
पतंग बनाने का एक आसान तरीक़ा यहाँ बता रहे हैं। चित्रों को देखो और शुरू करो। बाँस की पतली-पतली खपच्चियाँ, मोटा धागा, पतला काग़ज़, गोंद इकट्ठा कर लो।

बाँस की दो खपच्चियाँ लो - एक अगर 50 से.मी. लम्बी हो तो दूसरी 25 से.मी. लम्बी। ये दोनों खपच्चियाँ ज़्यादा मोटी न हों। खपच्चियों को चित्र में दिखाए तरीक़े से धन का चिन्ह बनाते हुए बाँध लो। इसके बाद धागे को इस पूरे ढाँचे के कोनों पर एक चक्कर लपेटकर बाँध दो। फिर इस ढाँचे पर काग़ज़ चिपका लो। काग़ज़ इतना बड़ा हो कि थोड़ा-थोड़ा ढाँचे से बाहर निकला रहे। अब चार छोटे-छोटे टुकड़े लो धागे के और उन्हें इस ढाँचे के चारों सिरों पर बाँध लो। धागे मज़बूती से बाँधना। ढाँचे पर चिपकाए हुए काग़ज़ पर चारों सिरों से कट लगा लो।

बस अब काग़ज़ के उन चारों किनारों को जो ढाँचे से बाहर निकले हैं, मोड़कर चिपका दो। चारों सिरों पर बँधे धागों को एक साथ बाँधो और उन्हें एक लम्बी डोर से जोड़ लो, उस डोर से जिससे तुम्हारी पतंग आसमान की तरफ़ जाएगी।

पतंग उड़ाने के लिए यह डोर तुम बाज़ार से ख़रीद लो क्योंकि इसके लिए पक्का धागा चाहिए। और अगर पक्का धागा भी तुम ख़ुद बनाना चाहो तो तुम्हारी मर्ज़ी। तो डोर और पतंग लेकर किसी खुले मैदान में पहुँच जाओ।

हम यह मानकर चल रहे हैं कि तुम्हारे घर के आसपास खुले मैदान होंगे। हर बच्चे को खेलने के लिए जगह मिलनी ही चाहिए। फिर भी कई लोग जगह के अभाव में घरों की छतों पर चढ़कर पतंग उड़ाते हैं। लेकिन छत पर पतंग उड़ाते समय सिर्फ़ ऊपर ही मत देखना। ❑

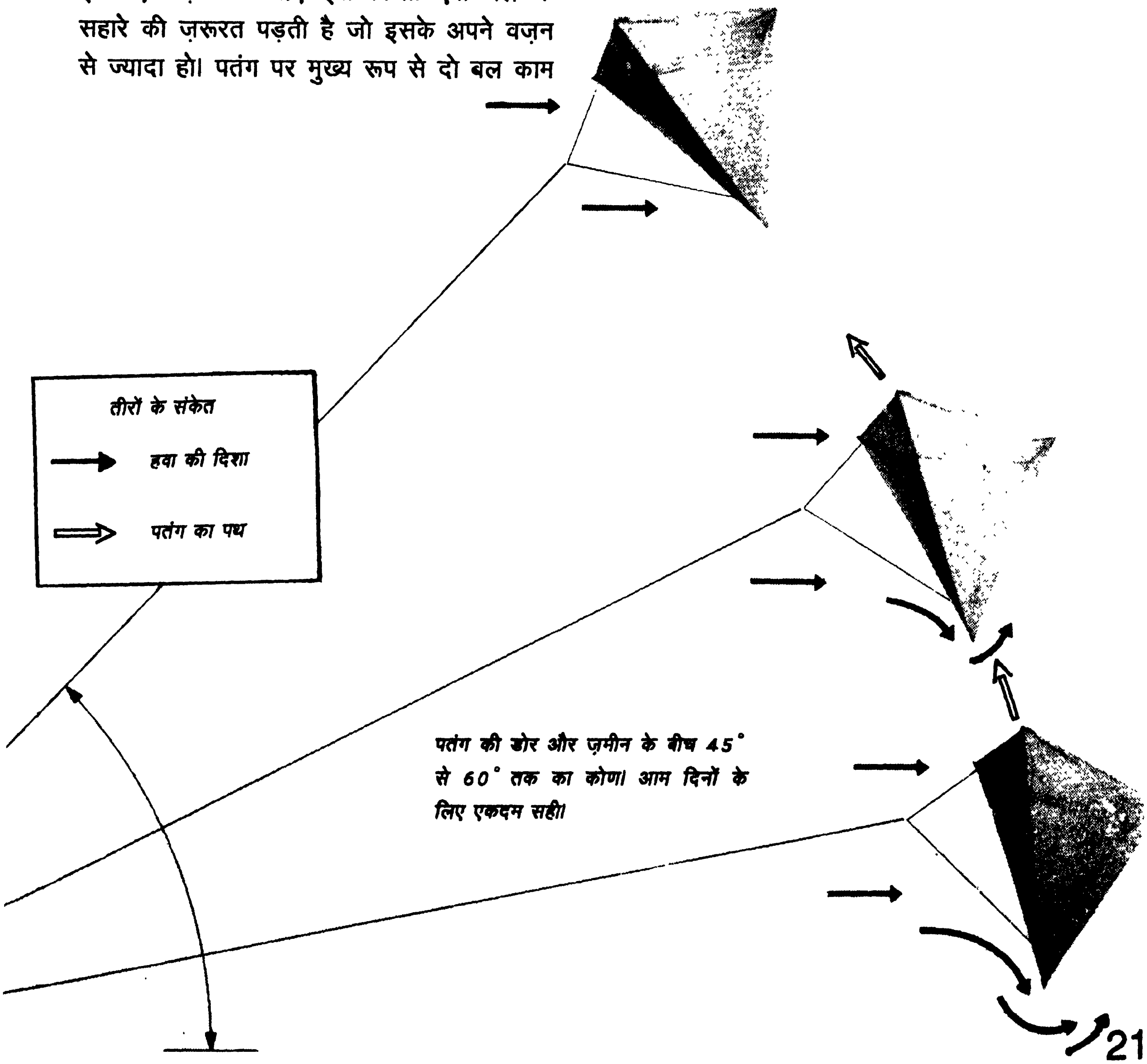


पतंग की उड़ान

ऊँचे आकाश और खुले मैदान में पतंग उड़ाने के लिए पतंग, मांझा, गिर्री-चरखी का तो तुमने इन्तज़ाम कर ही लिया होगा। पर इन सबके बाद जो चीज़ ज़रूरी है, वह है हवा और बहती हवा में पतंग को काबू में रखने का हुनर। यों तो यह हुनर बड़े भाई-बहनों या दोस्तों को पतंग उड़ाते देखकर, पतंग को छुट्टी देते-देते सीखा जा सकता है। पर अगर हम यह समझ लें कि पतंग उड़ती कैसे है तो मामला और आसान हो जाता है।

पतंग हवा से भारी होती है यह तो ज़ाहिर है। इसलिए उड़ने के लिए इसे किसी ऐसे बल के सहारे की ज़रूरत पड़ती है जो इसके अपने वज़न से ज्यादा हो। पतंग पर मुख्य रूप से दो बल काम करते हैं - पहला, उसका अपना वज़न या उस पर लगने वाला गुरुत्वाकर्षण बल जो उसे नीचे की ओर आकर्षित करता (खींचता) है। और दूसरा हवा का बल जो उसे ऊपर उठाता है। इसके अलावा एक तीसरा बल भी है जो पतंग पर असर डालता है - हवा के घर्षण से पैदा होने वाला रुकावट का बल। यह बल पतंग की आगे बढ़ने की दिशा के उल्टी तरफ लगता है।

नीचे के चित्रों को नीचे से ऊपर की ओर देखो तो समझ में आएगा। जब हम पतंग उड़ाना



शुरू करते हैं तो उसे खड़ा पकड़कर ऊपर की ओर छोड़ते हैं। खड़ा पकड़ने से पतंग की सतह पर सीधे हवा पड़ती है। इससे पतंग को ऊपर की ओर धक्का लगता है। पर चूँकि पतंग डोर से भी खिंची रहती है इसलिए तिरछे में ऊपर जाती है।

फिर जब पतंग कुछ ऊपर उड़ रही होती है, तो उसकी डोर ज़मीन से लगभग 30° का कोण बनाती है। तब भी ऊपर की ओर लगने वाला हवा का बल गुरुत्वाकर्षण से ज़्यादा होता है। पर ऐसे में पतंग कुछ तिरछी रहती है इसलिए पहले की तुलना में अब कम हवा उससे टकराती है। ऐसी स्थिति में भी पतंग ऊपर की ओर उठती है, पर पहले से धीमी रफ़्तार से।

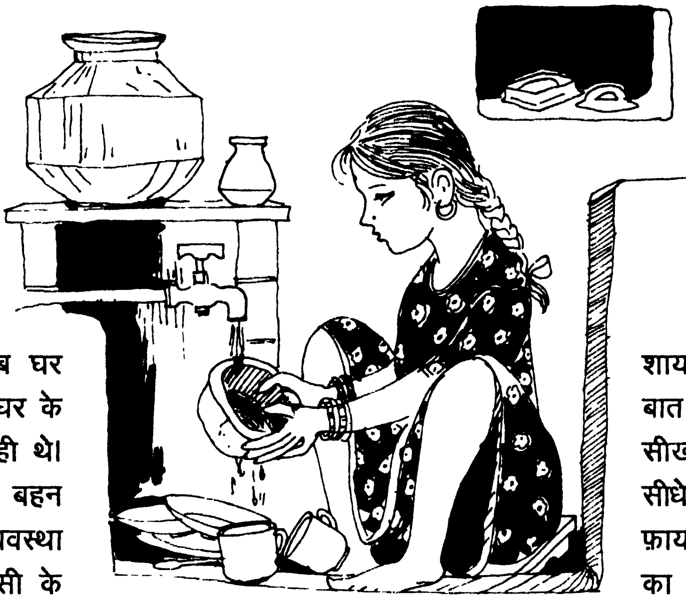
कुछ और ऊपर जाने पर जब पतंग की डोर ज़मीन के साथ लगभग 45° से 60° तक का कोण बनाती है तो पतंग स्थिर रहती है। ऐसी अवस्था में पतंग पर काम कर रहे तीनों बल संतुलित होते हैं इसलिए पतंग भी इस स्थिति में संतुलित उड़ती रहती है।

पर इतना ही काफ़ी नहीं है। यह तो हुई सामान्य दिनों की बात, जब हवा मध्यम हो। अगर किसी दिन हवा तेज़ चल रही हो तो पतंग को संतुलित रखने के लिए ढील देते रहना पड़ता है। इससे यह अधलेटी रहती है और इसकी सतह से कम हवा टकराती है। इसी तरह जिस दिन हवा बहुत धीमी चल रही हो उस दिन पतंग की डोर को बार-बार झटका देते रहना पड़ता है। इससे पतंग कुछ देर के लिए सीधी खड़ी हो जाती है जिससे ज़्यादा हवा उसकी सतह से टकराकर उसे ऊपर की ओर उठा देती है। यह सब तो पतंग उड़ाने की बारीक़ियाँ हैं। पर जब कोई पेंच अड़ाकर तुम्हारी पतंग काटने लगे तो उससे निपटने की तरक़ीब, दाँव-पेंच तो तुम्हें ही सोचने पड़ेंगे।

कहानी

गुड़िया नहीं जाएगी

❑ शकुन्तला सिरोठिया



गुड़िया न बहुत ग़रीब घर की थी और न उसके घर के लोग अपढ़ या गँवार ही थे। पाँच भाइयों की अकेली बहन थी। किन्तु घर की व्यवस्था ठीक नहीं होने से किसी के खाने-पीने का कोई समय नहीं था। माँ दिन भर चौके के काम में ही फँसी रहती। साथ में गुड़िया को भी लगाए रहती। उसके भाई तो बाहर घूमते-फिरते स्कूल भी चले जाते किन्तु गुड़िया की किसी को चिन्ता नहीं थी। अकेली बहन होने पर भी भाई उसका ध्यान नहीं रखते थे।

गुड़िया देखने-सुनने में भी अच्छी थी। बड़ी-बड़ी प्यारी-सी आँखें थीं किन्तु एक बार जब आँखों में तकलीफ़ थी तो किसी ने ठीक से इलाज नहीं कराया। फल यह हुआ कि एक आँख में फूली पड़ गई। दिन भर सिर झुकाए संकोची गुड़िया काम में लगी रहती। मुँह और आँखों पर बाल गिरते तो कभी सिर झटककर उन्हें पीछे कर देती।

दिन भर गुड़िया काम में लगी रहती। दौड़-दौड़कर भाइयों को चाय देना, प्यालियाँ उठाकर लाना, उन्हें धोना, खाना परोसना, कभी माँ का चौके के कामों में हाथ बँटाना आदि काम उसे करने पड़ते थे। आस-पड़ोस में जाना, खेलना या सखी-सहेलियों से बात करना गुड़िया ने जाना ही नहीं। यह सब उस नन्ही बच्ची के भाग्य में ही शायद नहीं था। किसी की बात का विरोध करना उसने सीखा ही नहीं था। उसके सीधे स्वभाव का सब फ़ायदा उठाते थे। भाइयों का इतना काम करने पर भी कोई कभी उससे प्यार से नहीं बोलता। वह उसकी आशा भी नहीं करती थी। माँ तारीफ़ करती तो उसका अर्थ होता कि उसे और काम करना चाहिए। "हमारी गुड़िया बड़ी सीधी है। बहुत सहारा देती है मुझे।"

कभी माँ कहती, "गुड़िया देख तो तेरा भाई कैसा नखरेबाज़ है। अरे, नहीं खाना था तो लिया ही क्यों था। पूरी रोटी थाली में छोड़ गया है। तू ही खा ले बेटा। इस महंगाई में भला कहीं फेंका जा सकता है, अन्न।"

बेचारी गुड़िगा सिर नीचा करके खा लेती। इस प्रकार दिन में एक-दो बार समय-बेसमय उसे भूख और बिना भूख के भी खाना पड़ जाता था। उसका पेट ख़राब रहने लगा। जब चाहे बुख़ार आ जाता। बारह वर्ष की हो गई किन्तु उसकी बाढ़ रुक गई थी।

उसके पिता जी बाहर काम करते थे। घर में बहुत नहीं रह पाते थे। घर की किसी बात में उनका दख़ल नहीं था। इस प्रकार घर भरा-पूरा होने पर भी गुड़िया अनाथ थी। किसी को उसकी

चिन्ता नहीं। उसकी कोई माँग नहीं थी। जैसा खाने को दे दो खा लेती थी। जैसा पहनाओ पहन लेती थी। बरसात के पानी में भीग-भीगकर काम करने के कारण उसके पैरों की उंगलियाँ सड़ जातीं तब उसकी माँ उसमें हल्दी और तेल लगा देती। जैसा भी था गुड़िया सब बिना किसी शिकायत के सह जाती थी। इससे अच्छी ज़िन्दगी की उसे कल्पना भी नहीं थी।

एक बार उसकी बुआ कुछ दिनों के लिए आईं तो उन्होंने कहा, "भाभी गुड़िया को मेरे साथ भेज दो मैं इसे पढ़ाउँगी।"

गुड़िया बुआ के साथ चली गई। उसे वहाँ स्कूल में भरती करा दिया गया, किन्तु उसे जल्दी ही वहाँ से निकाल भी लिया। स्कूल में वह किसी से नहीं बोलती, कुछ पूछने पर भी किसी बात का उत्तर नहीं देती। कक्षा में जो काम दिया जाता वह भी नहीं करती। बुआ के लिए गुड़िया एक समस्या बन गई। हारकर उन्होंने उसे व्यस्त रखने के लिए घर के काम में लगाना शुरू कर दिया। इसकी तो वह आदी थी, उसका मन लग गया। उसने धीरे-धीरे खाना बनाना सीख लिया। चीज़ों को तरतीब से लगाती। सफ़ाई पसन्द थी वह। रसोई के हर सामान को पोंछकर यथास्थान रखती। बुआ को सन्तोष हुआ कि गुड़िया का मन अब उनके यहाँ लग गया है लेकिन अभी भी वह अपनी तरफ से किसी से बात नहीं करती। कभी खुद माँगकर खाना नहीं खाती।

घर की नौकरानी भी एक लड़की थी। गुड़िया से दो-तीन वर्ष बड़ी। उससे वह हिल-मिल गई। जब बुआ नहीं होतीं तो वह नौकरानी से खुलकर बात करती। अब कभी-कभी खिल-खिलाकर हँसती भी थी। उसके मन की घुटन अब कम हो रही थी। मन की गाँठें भी खुलने लगी थीं। एक दिन नौकरानी ने पूछा, "गुड़िया तुम लोग कितने भाई-बहन हो?"

प्रश्न सुनकर जैसे गुड़िया को अच्छा नहीं लगा, "कोई भी भाई-बहन नहीं हैं मेरे।"

नौकरानी उसकी बात सुनकर चौंकी। बोली, "तो तुम अकेली हो। तब तो तुम्हें ख़ूब प्यार करते होंगे।"

गुड़िया की भौंहों पर बल पड़ गया, "नहीं, नहीं, मुझे कोई प्यार नहीं करता।"

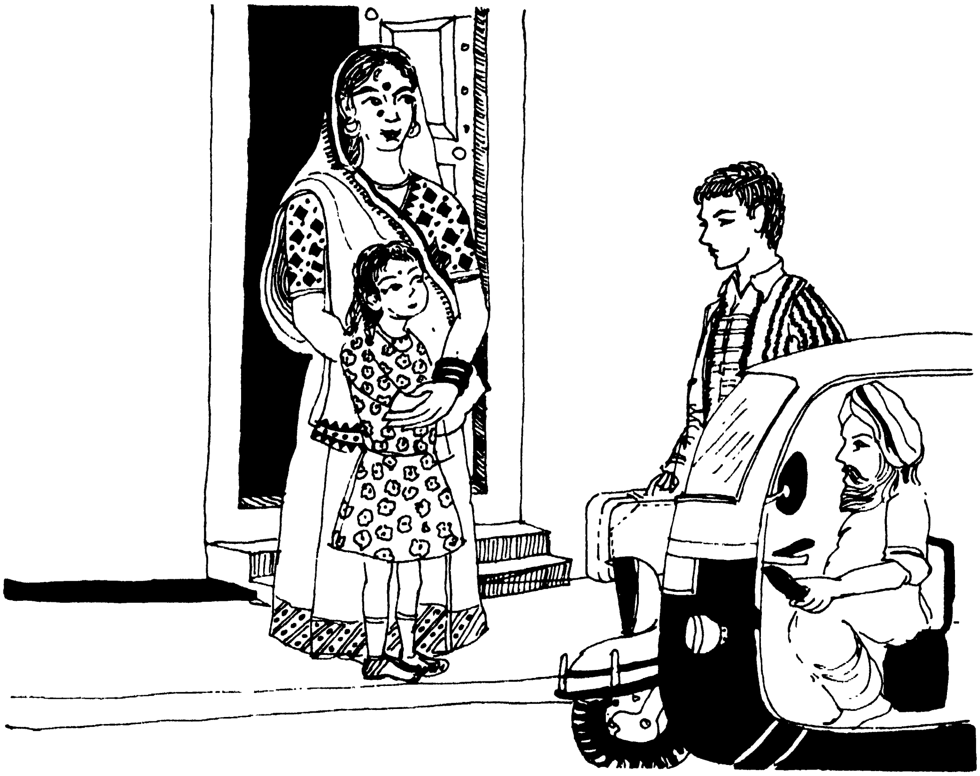
इतने दिनों तक गुड़िया के मन के दबे भाव ऊपर झलक आए। माँ तथा भाइयों के व्यवहार ने उसमें घृणा और बदले की भावना भर दी थी जिसे वह खुद ठीक से नहीं समझ पाई थी। अब बुआ के घर आकर उसने यहाँ का और माँ के यहाँ का अन्तर समझा था।

नौकरानी ने जैसे उसके मन को कुरेदा, "यहाँ बुआ प्यार करती हैं?"

गुड़िया ने ज़ोर देकर दृढ़ स्वर में कहा, "हाँ, बुआ ख़ूब प्यार करती हैं मुझे। मैं अब यहीं रहूँगी।"



बुआ ने जब गुड़िया की बातें सुनी तो आश्चर्य लगा। उस बेचारी बच्ची के प्रति प्यार और दया भी उमड़ आई। उन्होंने भी सोचा कि उसे वे अपने पास ही रखेंगी। इधर आठ-दस महीनों में गुड़िया के स्वभाव में ही नहीं स्वास्थ्य और रंग-रूप में भी बड़ा अन्तर आ गया था। लम्बी होने के साथ उसका रंग भी निखर आया। शरीर



भरा-भरा हो चला था। आँख की फूली भी अब विशेष दिखाई नहीं देती थी। लोग कहते बड़ी प्यारी लड़की है।

बुआ उसे घर में पढ़ाने भी लगी थीं। कभी-कभी बात करते समय उसके मुख पर मुस्कुराहट भी झलक आती। लगता था वह खुश है बुआ के यहाँ। तभी एक दिन अचानक उसका बड़ा भाई उसे लेने आ गया।

"माँ ने गुड़िया को बुलाया है।"

भाई को देखकर गुड़िया का चेहरा बुझ गया। शाम को बुआ उसे साथ लेकर खाने बैठीं। "गुड़िया तूने तो मुझे इतना सहारा दिया कि मैंने चौके में झाँकना ही छोड़ दिया। मुझे यही नहीं मालूम कौन-सी चीज़ कहाँ रखी है, क्या है क्या नहीं है, यह सब बताती जाना।"

गुड़िया सिर नीचा किए बुआ की बात सुनती रही। पता ही नहीं लग रहा था कि वह जाना चाहती है या नहीं। तभी थाली में उसके आँसू टप-टप टपकने लगे। हाथ में रोटी का गस्सा मुख तक नहीं गया। बुआ ने अपने आँचल से उसके आँसू पोंछ दिए। लेकिन न बुआ ने कुछ कहा न गुड़िया ने।

गाड़ी का समय हो गया। भाई गुड़िया को लेकर जाने को तैयार हो गया। रिक्शा दरवाज़े पर आ गया। बुआ उन्हें विदा करने को खड़ी थीं। उनका मन गुड़िया को भेजने का नहीं था। किन्तु सोचा लड़की तो दूसरे की है। जब माँ ने बुलाया है और भाई लेने आया है तब भला कैसे मना कर सकती हैं।

भाई अटेची लेकर दरवाज़े से बाहर निकला। गुड़िया और बुआ भी बाहर आ गईं कि अचानक गुड़िया पलट गई और बुआ से लिपटकर बोली, "मैं नहीं जाऊँगी माँ के पास। यहीं रहूँगी मैं।" बुआ थोड़ी देर असमंजस में खड़ी रहीं फिर गुड़िया को कसकर छाती से लगाकर दृढ़ता से बोलीं, "गुड़िया नहीं जाएगी। भाभी से कह देना जब मुझे समय मिलेगा खुद लेकर आऊँगी।"

बुआ के यहाँ रहकर गुड़िया का अहम जाग गया था। अब विरोध करने की शक्ति और साहस उसमें आ गया था। उसे लगा कि अब उसे अपना घर मिल गया जहाँ वह सुरक्षित है।

हम हैं पेंग्विन



मैं किंग प्रजाति का एक छोटा बच्चा हूँ।



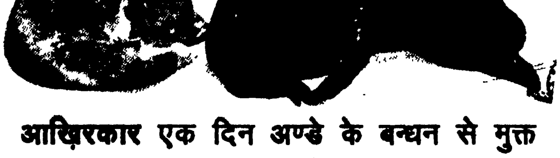
शुरू में मैं अण्डे के अन्दर ही पल रहा होता हूँ। मेरे माँ और बापू बारी-बारी अण्डे को अपने पंजों पर रखकर सेते हैं, उसकी देखभाल करते हैं। क्या तुम्हारे माँ-बापू भी इसी तरह तुम्हारी देखभाल करते हैं?



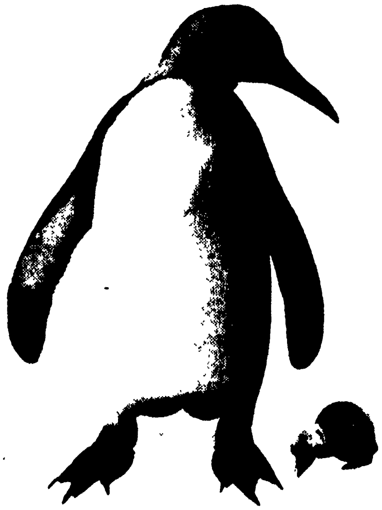
लगभग साठ दिन मुझे अण्डे के अन्दर रहना पड़ता है। इस दौरान माँ-बापू में से एक समुन्दर में शिकार करने जाता है और दूसरा मुझे सेता रहता है। फिर लगभग पन्द्रह दिन बाद पाली बदल जाती है।



अण्डे से बाहर निकलने के लिए मुझे भी थोड़ी कोशिश करनी पड़ती है।



आख़िरकार एक दिन अण्डे के बन्धन से मुक्त हो ही जाता हूँ मैं।

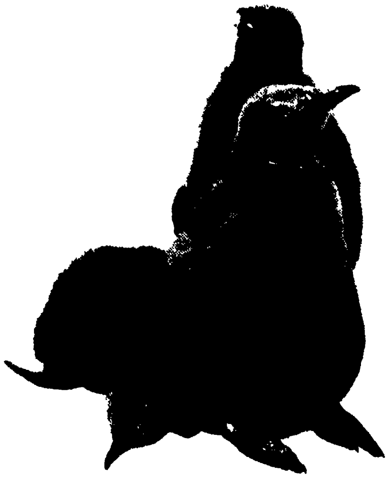


एक दिन की उम्र में न तो मेरे तन पर रोएँ होते हैं, न कोई स्वेटर। बहुत ज़्यादा ठण्ड लगती है तो माँ या बापू के पैरों के बीच बैठकर थोड़ी गर्माहट ले लेता हूँ।

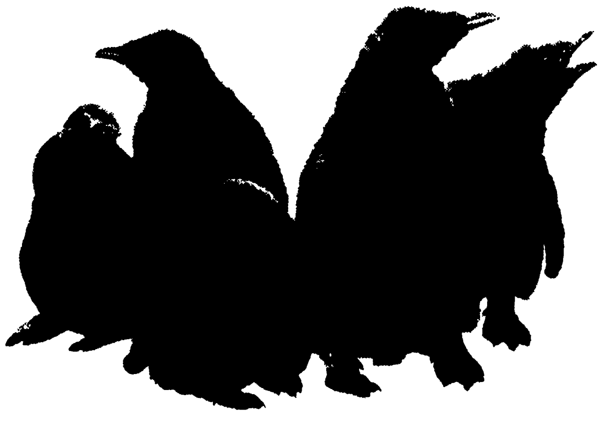
जी हाँ, मैं वही हूँ। अब दो माह को हो गया हूँ न इसलिए मेरे तन पर ये भूरे बाल उग आए हैं।



अब मैं पूरे आठ माह का हो गया हूँ।



हम सबके माँ-बाप पिछले कई महीनों से समुन्दर में मछली के शिकार पर गए हुए हैं। हम भूखे बैठे हैं, उनके इन्तज़ार में। वो हमारे लिए तरह-तरह की स्वादिष्ट मछलियाँ लाएँगे।



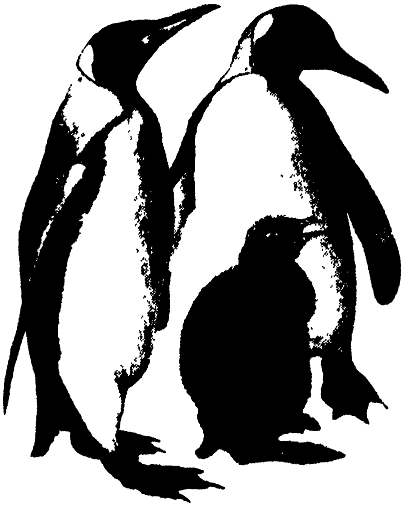
हमारे यहाँ तो बच्चे पैदा करने का मौसम तय होता है। हर साल सर्दियों के पहले ही कुनबे के सारे बच्चे पैदा हो जाते हैं। कुछ नवम्बर के आसपास और कुछ जनवरी से मार्च के बीच, पर उसी मौसम में। और फिर हम सारे हमउम्र बच्चे पास-पास रहते हैं - गर्मी के लिए भी और एहतियात के लिहाज़ से भी। वैसे हम पेंग्विन अक्सर बड़े-बड़े झुण्डों में ही रहते हैं। इन झुण्डों में कई हज़ार पेंग्विन एक साथ होते हैं।



एक साल की उम्र बड़ी अजीब-सी होती है हमारी। यह है किशोरावस्था! बचपन वाले भूरे रोएँ झड़ते हैं और उनके नीचे से झाँक रहे होते हैं बड़ों की तरह के पंख। कैसे अधपकी खिचड़ीनुमा दिखते हैं हम।



और एक महीने बाद मैं बिल्कुल वयस्क दिखने लगता हूँ। मेरी शानदार चोंच के नीचे का रंग भी नारंगी होने लगता है। अब तक माँ-बापू मेरी देखभाल, मेरे खाने-पीने का इन्तज़ाम करते थे। पर अब मैं ख़ुद समुन्दर में तैरने और मछली का शिकार करने भी जा सकता हूँ।



ढाई साल की उम्र है मेरी। और मेरे साथ हैं मेरा साथी और हमारा बच्चा। यही तो है हमारे जीवन का क्रम।



ये है हमारे ही परिवार का दूसरा भाग - एम्परर पेंग्विन। इनका और हमारा जीवनचक्र बहुत कुछ एक-सा है।

यह तो थी मेरी राम कहानी। चलते-चलते मैं तुम लोगों को अपने दूसरे भाई-बन्धुओं से भी मिलाता चलूँ। यानी पेंग्विन की दूसरी प्रजातियों से -



ये हैं एडेली पेंग्विन। सबसे ज़्यादा पाई जाने वाली पेंग्विन।



ये जेन्टू पेंग्विन हैं। ये अपने अण्डे सेने और बच्चों को पालने के लिए चट्टानों के बीच उगे घास के आसपास पत्थर और घासफूस से घोंसले बनाते हैं।

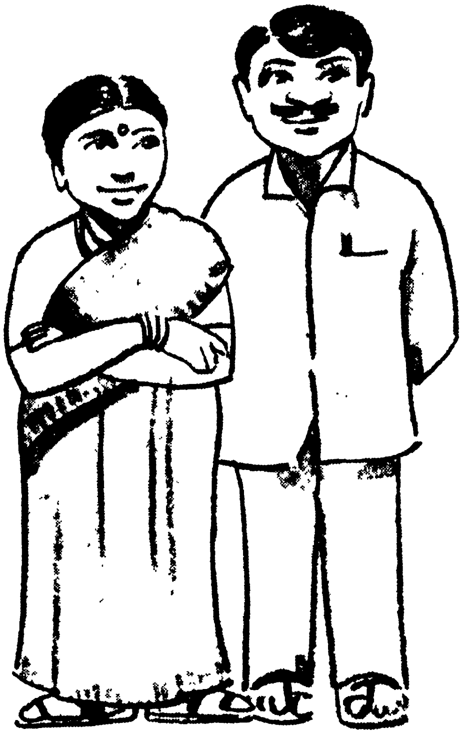


और ये हैं चिनस्ट्रैप पेंग्विन। यानी पट्टीदार गाल वाले। ये एक बार में दो अण्डे देते हैं। बहुत दुष्ट होते हैं ये। अक्सर एडेली पेंग्विन के झुण्डों में घुसकर उनके घोंसलों पर कब्ज़ा कर लेते हैं।



ये रॉकहॉपर पेंग्विन हैं। इसी से मिलती-जुलती शक्ल और आदतें होती हैं मैकरोनी पेंग्विन की।

(चित्र सी हाऊ दे ग्रो -पेंग्विन, ग्रीनपीस बुक ऑफ़ एन्टार्टिका एवं वाइल्ड लाइफ़-द ब्यूटी ऑफ़ एनिमल्स से साभार।)



नई प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो परम पिता
लिख सकूँ एक अच्छी कविता।

ऐसी कविता जिसको सुनकर
माँ अपना गुस्सा भूल जाए,
ऐसी कविता जिसको सुनकर
पापा का मन भी फूल जाए।

ऐसी कविता जिसको सुनकर
सो जाए पड़ोस का हलवाई,
मैं बड़े मौज से खा जाऊँ
उसकी दुकान की मिठाई।

ऐसी कविता जिसको सुनकर
स्कूल खेल मैदान बने,
पढ़ने की मेज़ और कुरसी
झट दौड़े वायुयान बने।









मैं उड़ूँ बहुत ऊपर नभ में
अपने टामी को लिए साथ,
छू आऊँ चाँद सितारों को
मेरे हो जाएँ अजब ठाठ।

ऐसी कविता जिसको सुनकर
जाड़े में फलने लगें आम,
ऐसी कविता जिसको सुनकर
सब कहें मुझे कवि जी प्रणाम।

मैं दूँ सबको आशीर्वाद
मुझको झट हो हर चीज़ याद,
कक्षा में फ़र्स्ट क्लास आऊँ
प्रभु दो कविता का वह प्रसाद

❑ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना



(डॉ. हरिकृष्ण देवसरे द्वारा सम्पादित
'बच्चों की सौ कविताएँ' से साभार)
चित्र : दीपक सोनार



माथापच्ची

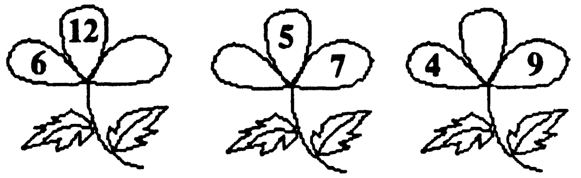
(1)

एक सांकेतिक भाषा में (+) का अर्थ गुणा, (-) का अर्थ भाग, (x) का अर्थ जोड़ और (÷) का अर्थ बाकी हो तो इनका मान क्या होगा?

1. 15 - 5 x 2
2. 2 + 3 ÷ 2
3. 1 x 10 ÷ 4
4. 7 + 2 - 2

(2)

इन फूलों की पंखुड़ियों में एक ख़ास क्रम में अंक जमे हुए हैं। पर जो पंखुड़ियाँ ख़ाली हैं उनमें कौन से अंक आएँगे?



(3)

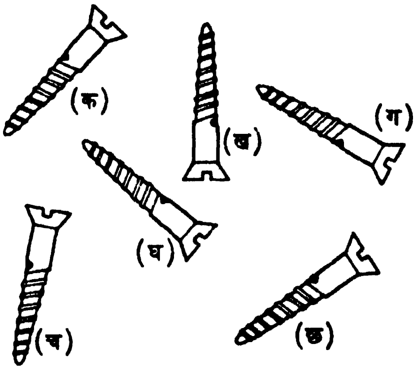
इस कहानी में कुछ बुनियादी ग़लतियाँ हैं। ढूँढ निकालो उन्हें।

'इतवार के दिन गुड़िया की नींद देर से खुली। उसने उठते ही घड़ी देखी तो सात बज रहे थे। उसने जल्दी से हाथ-मुँह धोकर गाय को चारा डाला और फिर चल पड़ी नदी किनारे सूर्योदय देखने।

वहाँ से वह नहा-धोकर घर लौटी। और जल्दी-जल्दी स्कूल की तैयारी करने लगी। इतने में माँ ने आवाज़ दी तो वह बारिश में भीग रहे कपड़े उठाने चली गई। कपड़े तह करके घर में रखकर वह बापू के साथ बाज़ार में दुकान लगाने चल पड़ी। कड़ी धूप के कारण उन्हें पसीना आने लगा तो वे एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगे। वहीं बैठकर उन्होंने दोपहर का खाना खाया। और फिर दोनों खेत की बची हुई निंदाई करने में जुट गए।'

(4)

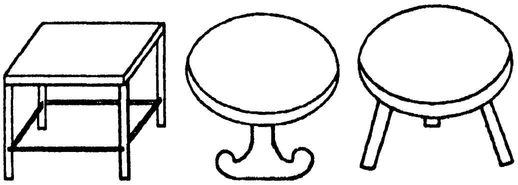
मैंने रमज़ान की दुकान से ये स्क्रू ख़रीदे। इनमें से पाँच तो एक जैसे हैं, एक कुछ अलग किस्म का है। पता लगाओ कौन-सा है वह अलग स्क्रू?



(5)

रामदीन के घर में गाय-भैंसें भी हैं और बकरियाँ भी। कुल मिलाकर बीस जानवर हैं उसके यहाँ। और हर रोज़ दोनों टाइम कुल बीस किलो दूध इकट्ठा हो जाता है। अगर एक समय में उसकी बकरियाँ पाव-पाव भर दूध देती हैं, गायें एक-एक लीटर और भैंसें पाँच-पाँच लीटर, तो बताओ कि कितनी-कितनी गाय-भैस-बकरियाँ हैं उसके यहाँ।

(6)



मुझे अपने घर के लिए एक छोटा-सा मेज़ ख़रीदना था। मैंने बाज़ार जाकर कई नमूने देखे। उन सबमें से मुझे जो तीन पसन्द आए उनके चित्र यहाँ दिए हैं। मज़बूत मेज़ तो चाहिए था पर मुझे सीधे-सरल डिज़ाइन बहुत भाते हैं। क्या तुम बताओगे मैंने इन तीनों में से कौन-सा मेज़ चुना होगा?

(7)

इन वाक्यों में छुपे हुए शहरों के नाम

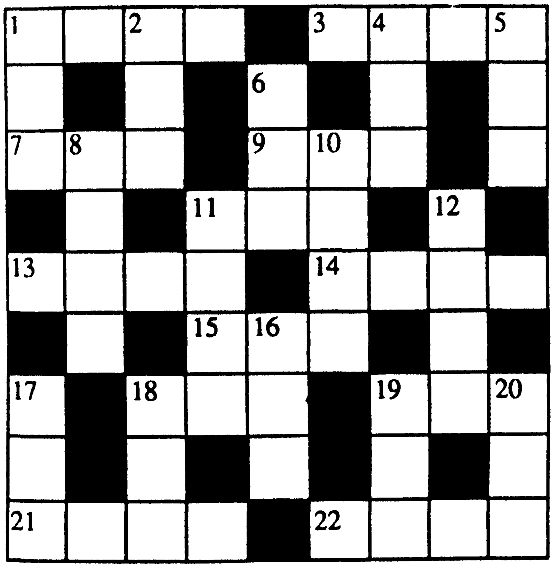
1. राम मोहन राय पुरवा क्षेत्र में गए।
2. विनोद झा सीना तानकर चलता है।
3. अफ़सर गुजानन्द के घर गए।
4. लॉरी वातानुकूलित घर में रहती है।
5. मासी धीरज रखो।
6. विरासत ना मिलना ही बेहतर है।

(8)

शाना अपने मोहल्ले के बच्चों को इकट्ठा करके जादू दिखा रही थी। बीच-बीच में वे सब पहेलियाँ भी बूझते जाते थे। एक बार शाना ने एक डिब्बे में पाँच कंचे डाले - एक नीला, एक पीला, एक हरा और दो लाल। फिर डिब्बे को कई बार हिलाकर उसने दो कंचे निकाले। उन्हें देखकर उसने कहा, "एक कंचा तो लाल है।"

कितनी सम्भावना है कि दूसरा भी लाल होगा?

वर्ग - पहेली : 56



संकेत : बाएँ से दाएँ

1. प्रसिद्धि (4)
3. रब के ताव से व्यवहार (4)
7. शहीद होने को तैयार (3)
9. यान पर बैठकर बिताओ (3)
11. मरने के बाद यहाँ यादें बरक़रार रहती हैं (3)
13. मवेशी (2,2)
14. रवा की दावत में क्या घटी? (4)
15. जलाना (3)
18. तीन पत्ती लाओ, एक बर्तन पाओ (3)
19. दिल पर लगने वाली चोट (3)
21. सुन्दर (4)
22. दिकपाल की उलटफेर में अच्छा व्यक्ति(4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. अप्रसन्न (3)
2. दीदी के लिए वर, में से पहनने के लिए निकालो (3)
4. तोता क्या करता है? (3)
5. वह हरा है सूअर (3)
6. जिसका मिलना सम्भव न हो, अप्राप्य (3)
8. एक हल्की गैस (4)
10. वार नाप की उलटफेर में लिखित आज्ञा और पतिंगा भी (4)
11. छोटे शहर में रहने वाले (4)
12. नारद दान करे फिर भी ग़ायब रहे (4)
16. माथा (3)
17. कमला नहीं है, वचन है, रचना है अरबी में (3)
18. वेतन भी, कीचड़ भी (3)
19. कटी-सटी है फिर भी बिल्कुल ठीक (3)
20. माँ का भाई (3)

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें, बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नम्बर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-56 का हल जून, 1996 के अंक में देखें।

तुमने लिखी कहानी/कविता

सितम्बर, 95 अंक में दो तस्वीरें प्रकाशित की गई थीं और पाठकों से तस्वीर पर आधारित कविता या कहानी लिखने के लिए कहा गया था। कुछ चुनी हुई रचनाएँ यहाँ प्रकाशित की जा रही हैं।

शेर राजा शेर राजा
जंगल का तू राजा
माँस खाता ताज़ा ताज़ा
पूँछ तेरी लम्बी लाठी जैसी
कान तेरे सूप जैसे
शेर राजा शेर राजा
मेरे जंगल में तू आजा
तुझे देखकर सब डरते
भागे तो राह न मिलती
तुम तो हो इतने बड़े राजा
जंगल का तू है राजा

❑ प्रियंका जैन, सांगा, दमोह, म.प्र.

वन के राजा वनराज ने लिया है मन में ठान
चाहे प्राण भले चले जाएँ, आँच न आवे उनकी शान
चलती थी उनकी धाक यहाँ थे वे इस जंगल के राजा
पर इस दूजे शेर ने आकर बजा दिया उनका बाजा
बदला लेने की बहुत दिनों से मन में थी उनकी आशा
पर बहुत यत्न करने पर भी केवल हाथ लगी थी निराशा
मौक़ा अच्छा आज मिला जब नदी किनारे जल दोनों पीने आए
आमने-सामने एक दूजे को देखकर मन ही मन दोनों हर्षाए
दोनों शेरों की दहाड़ से वन की शान्ति हो गई भंग
देरी पल की न दोनों ने की, कर दी शुरू प्रलयकारी जंग

❑ रवि कुमार पाण्डेय, नौवीं, खड्डा, रीवा, म.प्र.

दो शेर

एक बहुत घना जंगल था। उस जंगल के बीच से होकर एक नदी बह रही थी। उस जंगल में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रहते थे। उस जंगल में दो शेरों के बीच बहुत दुश्मनी थी। उनमें से एक शेर का नाम विक्रम और दूसरे का नाम गब्बर था।

एक बार वे दोनों शिकार की तलाश में नदी को पार कर जंगल के दूसरे भाग में जा रहे थे। नदी पार करते हुए अचानक विक्रम ने गब्बर को पहचान लिया और अपनी दुश्मनी निकालने के लिए एक दूसरे के आमने-सामने, बीच नदी में खड़े हो गए। विक्रम ने गब्बर से कहा, "मेरा रास्ता छोड़ दो।"

गब्बर ने भी विक्रम से यही कहा। किन्तु दोनों ने एक दूसरे की बात नहीं मानी और वे आपस में लड़ते-लड़ते नदी पार हो गए और पानी से बाहर निकलकर दोनों में और ज़्यादा लड़ाई हुई। कुछ समय बाद ही उनकी समझ में आया कि लड़ना व्यर्थ है और फिर दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े हो गए। उन्होंने एक-दूसरे का रास्ता छोड़ दिया। और अपनी-अपनी राह चले गए।

❑ सरला चोलकर, मेहरा गाँव, इटारसी, म.प्र.



हम दो शेर लड़ते ख़ूब
उछलते ख़ूब
कभी पोखरों में, कभी जंगलों में
हम दो शेर लड़ते ख़ूब
उछलते ख़ूब
हमसे हैं सब डरते
लेकिन हम किसी से नहीं डरते।

❑ नारायण जी उम्मावा, रामपुरा, नीमच, म.प्र.

हम दोनों है भाई-भाई
खेल-खेल में करते लड़ाई।
हम दोनों की ये शरारत
किसी की समझ न आई।
हम हैं ऐसे भाई
करते नहीं आपस में लड़ाई।

❑ **विपिन यादव, सातवीं, होशंगाबाद, म.प्र.**

ये शेर है
कोई सामने आ जाए
तो नहीं ख़ैर है
ये दोनों हैं भाई-भाई।
करते हैं जमकर मस्ती
कभी तालाब में
कभी जंगल में
लगाते हैं छलाँगें।

❑ **राजेन्द्र सिंह सुलिया, काटकूट, खरगोन, म.प्र.**

सच्चे मित्र

दो शेर थे। अकडू व पकडू उनका नाम था। वे दोनों बड़े ही अच्छे मित्र थे। कभी झगड़ा नहीं करते थे। यदि किसी से कोई ग़लती हो जाती थी तो आपस में एक दूसरे से माफ़ी माँगकर समझौता कर लेते थे।

एक बार अकडू व पकडू ने मिलकर एक बड़े जंगली भैंसे का शिकार किया उसका माँस खाकर उनकी भूख तो मिट गई परन्तु उनकी प्यास न बुझी थी। अपनी प्यास बुझाने के लिए वे नदी पर पहुँचे। नदी के किनारे पर अत्यधिक कीचड़ था। अकडू तो आगे छलाँग लगाकर निकल आया परन्तु धीरे-धीरे चलने के कारण पकडू का पैर नदी की कीचड़ में फँस गया। यह देख अकडू ने अपने मित्र को कीचड़ से निकालने के लिए उस मरे हुए भैंसे का सींग लिया और उसे अपने मुँह में पकड़कर कीचड़ को हटाने की कोशिश की। जब वह कुछ कीचड़ हटाने में सफल हो गया तो फिर उसने अपने दोनों पंजों द्वारा कीचड़ इधर-उधर फेंकना शुरू कर दिया।

अंततः उसकी मेहनत रंग लाई। पकडू का पैर कीचड़ से बाहर आ गया। पकडू व अकडू दोनों खुशी के साथ अपने घर के पास आकर खेलने लगे।

❑ **प्राची शर्मा, आठवीं, बदनावर, धार, म.प्र.**

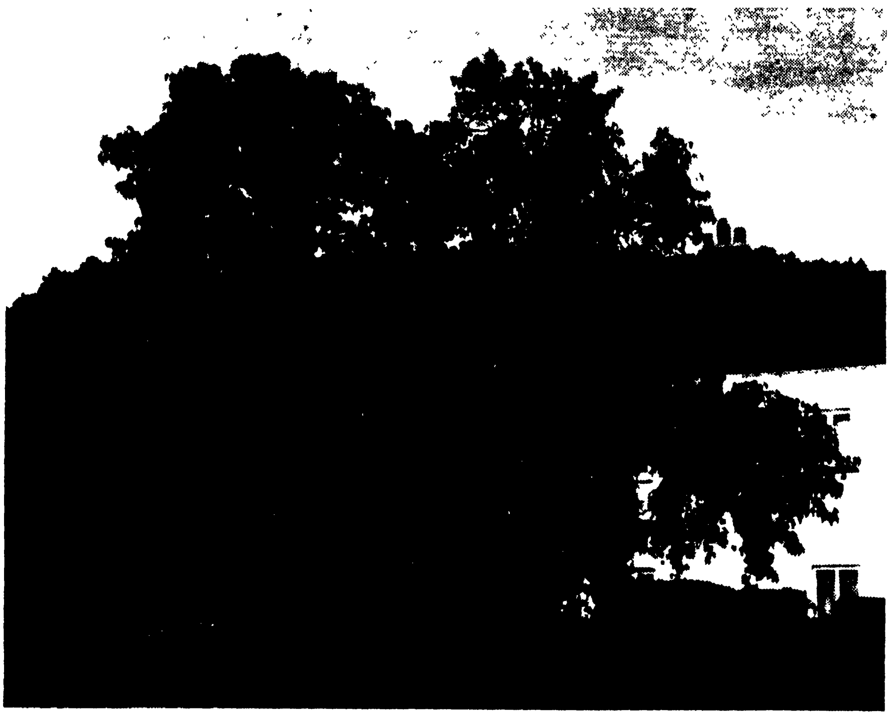


शेर के दो बच्चे थे।
ज़रा अकल के कच्चे थे।
एक दिन दोनों में हुई लड़ाई।
हाथापाई की नौबत आई।
मच गया कोहराम वहाँ पर।
अब शेरनी आ गई वहाँ पर।
आते ही उसने दोनों को डाँट लगाई।
दोनों हुए शर्म से पानी-पानी।
फिर कभी न लड़ने की मन में ठानी।

❑ **रवि कुमार पंकज, किशनगंज, बाराँ, राजस्थान**

इनकी रचनाएँ भी मिलीं : दिनेश सोने, नांदू, बैतूल। चन्द्र प्रकाश पटेल, हटौद बाज़ार; नरेन्द्र माण्डले, बिनौरी; रायपुर। रेशमा कटारे, सांगा, दमोह। मनीष अग्रवाल, खूटाकूड़ा; घासीराम पटेल, बेहरचुवाँ; प्रमोद सिन्हा, कुदमुरा; कुमुदनी, पेण्डरुवाँ; आर.बी. पाण्डेय, कोरजा; बिलासपुर। गायत्री पाटले, खामी, सिवनी। दीप्ती छावड़ा, ग्वालियर। सुबोध साकल्ले, भादूगाँव; अनुज वर्मा, होशंगाबाद। संदीप वर्मा, धामनोद, धार। मनीष गौतम, बघराजी, जबलपुर। हंस कुमार मसकोले, मोहगाँव, बालाघाट। हुकुमचन्द विश्वकर्मा, बेगमगंज, रायसेन। दयाराम तिवारी, निपनियाँ, शहडोल। मैयालाल सिंह, छतई। प्रदीप कुमार शुक्ल, मनगटी, रीवा। ओमप्रकाश कश्यप, बीजापुर; उमेश समरथ; छोटे डोंगर, बस्तर। सत्येन्द्र मिश्रा, शाहपुर, मगरोन, सागर। चन्द्रमोहन शर्मा, विजयपुर, मुरैना। सभी मध्य प्रदेश। चौधरी धर्मवीर अज्ञानी, सिहोरा, मथुरा, उत्तर प्रदेश । अजयकान्त पाठक, धौलपुर। गीता सोनी, लाँड़नू। सत्यनारायण तातेला, भीलवाड़ा। बनवारीलाल लखेरा, राणेर, बीकानेर। रामचरण तम्बोली, इस्माईलपुरा, अलवर। सभी राजस्थान।

शहतूत



शहतूत तुममें से कई ने खाया होगा और शायद कुछ ने नहीं भी खाया हो। यह बहुत स्वादिष्ट और फ़ायदेमन्द फल है। शहतूत का पेड़ जो भारत में आमतौर पर मिलता है, मूल रूप से चीन का निवासी है। यह पेड़ पहाड़ी इलाक़ों में, हिमालय पर ख़ूब मिलता है। यह पंजाब, देहरादून और काश्मीर में भी काफ़ी तादाद में मिलता है।

शहतूत का पेड़, मध्यम आकार के पेड़ के रूप में या झाड़ी के रूप में होता है। इसकी पत्ती किनारों से कटी हुई होती है। पत्ते बड़े, अण्डाकार होते हैं। जाड़े के अन्त तक पेड़ के सारे पत्ते झड़ जाते हैं। मार्च, अप्रैल में नए पत्ते और फूल निकल आते हैं। इसके फल पतले, लम्बे, मुलायम-से होते हैं। फल में गूदा ही गूदा होता है। यह बिना छिलके का रसीला फल होता है। दिखने में रेशम के लम्बे कीड़ों जैसे ये फल दो इंच तक लम्बे होते हैं। आमतौर पर फल हरे रंग के होते हैं। पकने पर ये गाढ़े लाल रंग के या काले हो जाते हैं। एक दूसरी जाति का शहतूत का फल सफ़ेद रंग का होता है और पकने के बाद भी सफ़ेद बना रहता है। जंगली शहतूत के फल छोटे और खट्टे होते हैं।

शहतूत के पेड़ की छाल गहरे भूरे रंग की खुरदुरी होती है। लकड़ी सख़्त, पीले रंग की होती है। इसका पेड़ रेतीली चिकनी मिट्टी में ख़ूब अच्छे से बढ़ता है।

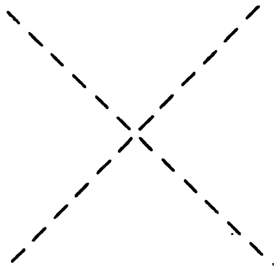
शहतूत के पेड़ की सभी चीज़ें किसी न किसी काम में आती हैं। इसकी पत्तियों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं इसीलिए बड़ी संख्या में शहतूत के पेड़ लगाए जाते हैं। चीन में भी यह पेड़ रेशम के कीड़े पालने के लिए लगाया जाता है।

इसके अलावा इस पेड़ की लकड़ी से खेल का सामान और फ़र्नीचर बनाया जाता है। डालियों के रेशों से पतले धागे बनाए जाते हैं जो बहुत मज़बूत होते हैं। इसकी छाल से कागज़ भी बनता है और यह दवा के काम भी आती है।

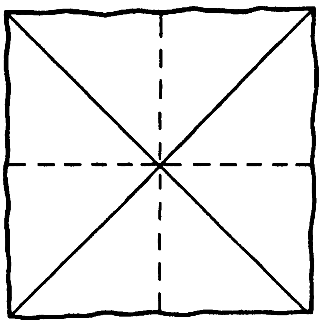
शहतूत को अंग्रेज़ी में *Mulberry* कहते हैं।

खेल कागज़ का

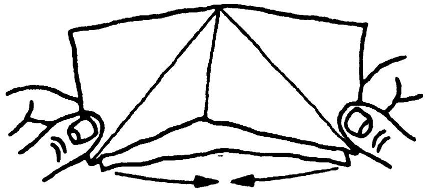
उल्लू



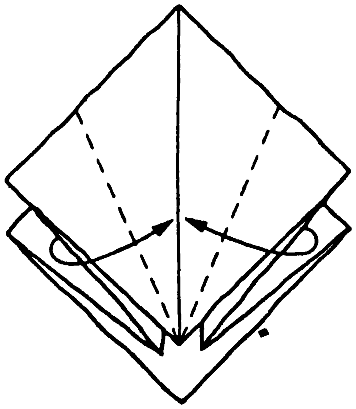
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। मोड़ पक्के करके खोल लो। कागज़ को पलट लो।



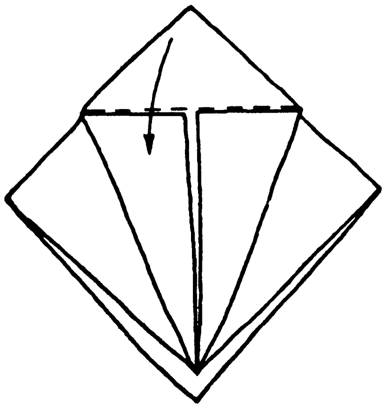
2. इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं में से किसी एक पर से मोड़ बनाकर, पक्का करके, खोल लो। फिर दूसरी रेखा पर से मोड़ बनाओ।



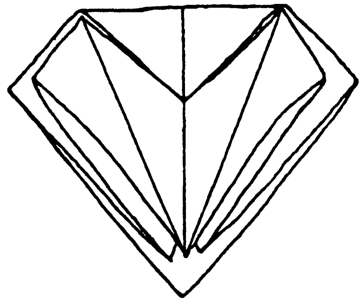
3. अब इस चित्र में दिखाए तरीक़े से दोनों सिरों को पकड़कर पास लाओ।



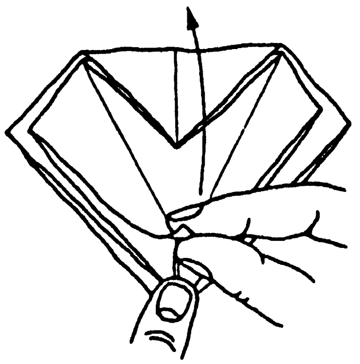
4. इस तरह की आकृति मिलेगी। इसके मोड़ों को दबाकर पक्का कर लो। अब चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से ऊपर की दो सतहों को तीर की दिशा में मोड़ लो।



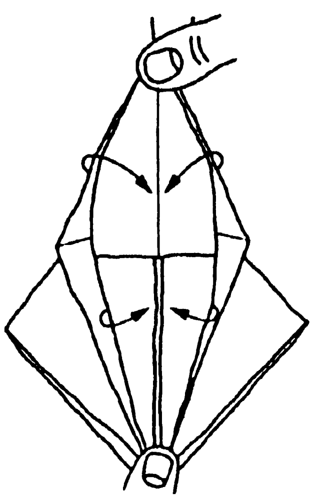
5. इस तरह। अब टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।



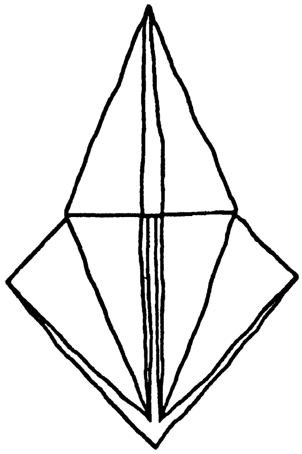
6. दाएँ-बाएँ के जो सिरे अभी मोड़े थे उन्हें खोल लो।



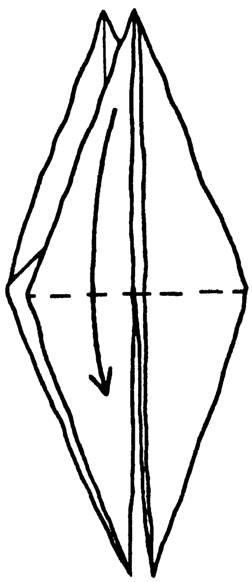
7. अब चित्र में दिखाए तरीक़े से सबसे ऊपरी परत को पकड़कर खोलो।



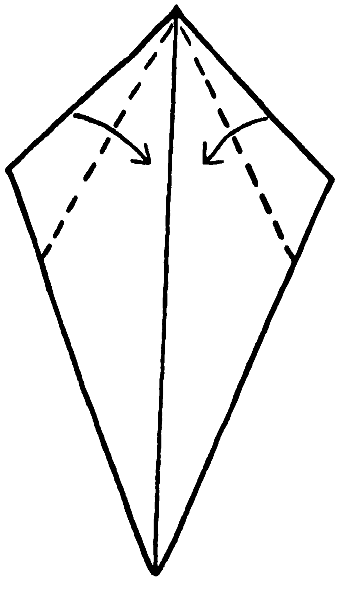
8. इस तरह। अब इस आकृति को पहले बने हुए मोड़ों के निशान पर से मोड़ लो। चित्र के अनुसार उठे हुए सिरे तीर की दिशा में मुड़ेंगे।



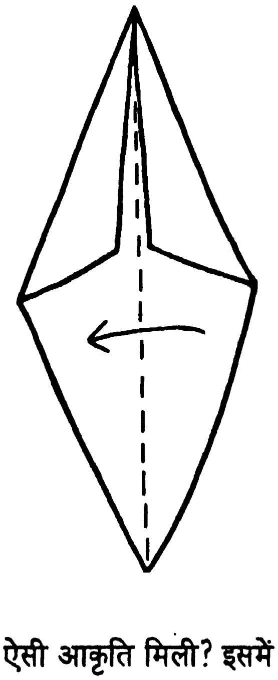
9. ऐसी आकृति बनेगी। तुम्हारी बनी कि नहीं। अब आकृति को पलट लो और चित्र-4 से चित्र-9 तक की क्रियाएँ दोहरा लो।



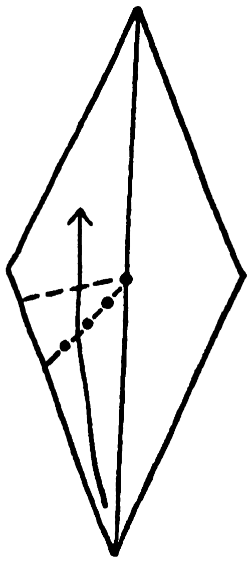
10. ऐसी आकृति बन जाए तो आगे चलो। इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में ऊपर की सतह को मोड़ लो। आकृति को पलट लो फिर उस तरफ भी यही क्रिया दोहरा लो।



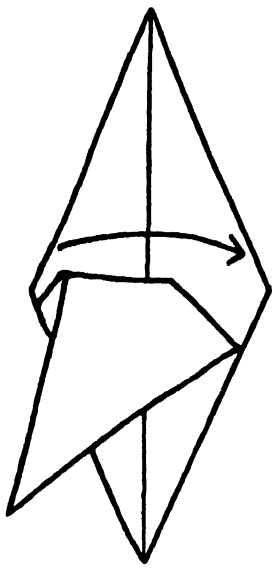
11. ऐसी आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी सतहों को तीर की दिशा में मोड़ो। आकृति को पलट लो। फिर वही क्रिया दोहराओ।



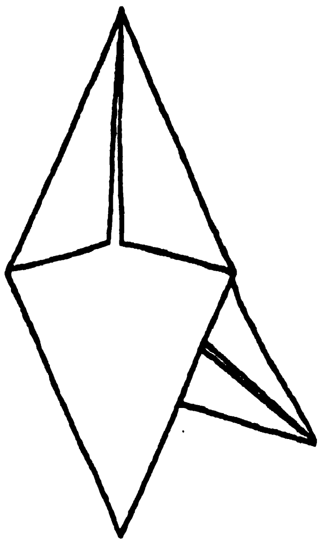
12. ऐसी आकृति मिली? इसमें बनी टूटी रेखा पर से दाएँ हिस्से की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो।



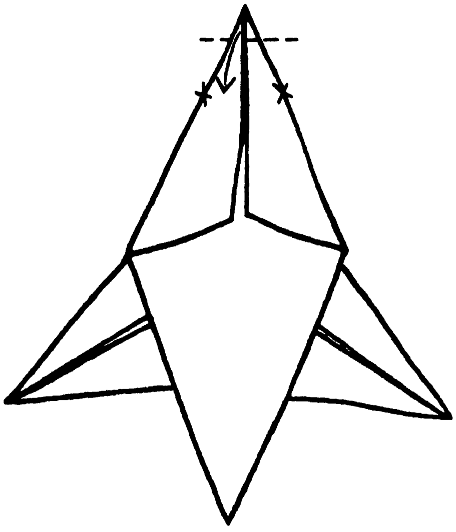
13. अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ो। फिर इसी चित्र में बिन्दु वाली रेखा पर से इसी सतह को फिर से मोड़ते हुए वापस उसी दिशा में लाओ।



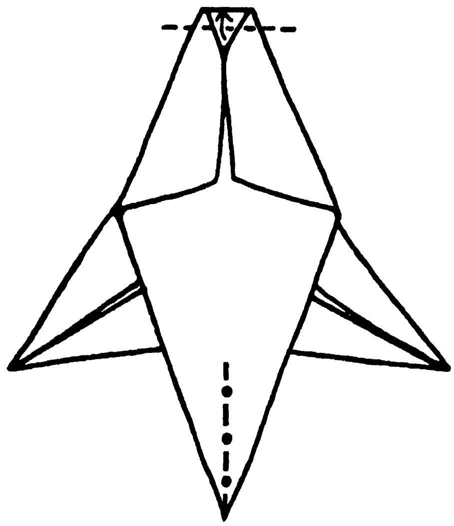
14. इस तरह। अब आकृति की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ो।



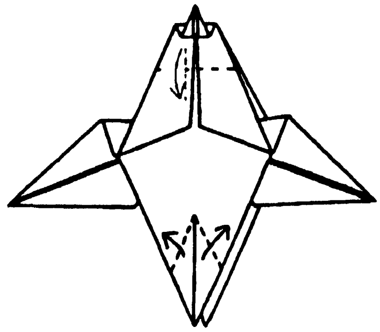
15. इस तरह। ऐसी आकृति तुम्हारी भी बन गई होगी। अब बाईं ओर भी चित्र-12 से चित्र-14 की क्रियाएँ दोहराओ।



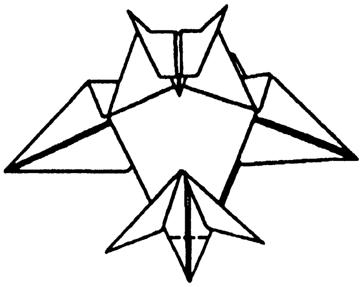
16. जब तुम्हारे पास भी ऐसी आकृति बन जाए तब आगे बढ़ो। टूटी रेखा पर से ऊपर के सिरे को तीर की दिशा में मोड़ो। चित्र में जिन जगहों पर कट के निशान लगे हैं, कैंची से उसके पीछे वाली सतह पर छोटे-छोटे कट लगा लो।



17. अब एक बार फिर ऊपर के मुड़े सिरे को टूटी रेखा पर से ऊपर की ओर मोड़ो। इसी चित्र में नीचे दिख रही बिन्दु वाली रेखा पर से ऊपरी सतह को कैंची से कट लगा लो।



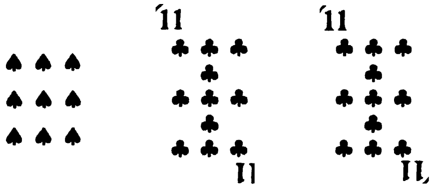
18. कटे हुए दोनों सिरों को टूटी रेखा पर से मोड़ लो। आकृति के ऊपरी सिरे को, टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।



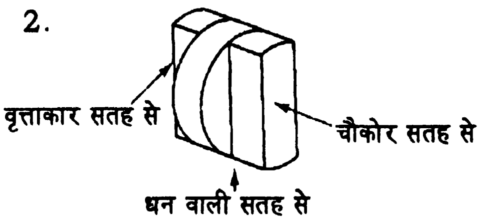
19. अब नीचे की ओर दिख रही टूटी रेखा पर से उस निचले हिस्से को पीछे की ओर मोड़ लो। यह तुम्हारे उल्लू को खड़ा करने में मदद करेगा। बस उल्लू तैयार है। इसकी आँखें बना दो, टुकुर-टुकुर ताकने को।

माथापच्ची : हल, जनवरी '96 अंक के

1. ये हैं वे तीन ताश :



2.



3. कम्पनी ने पेस्ट की ट्यूब का छेद चौड़ा कर दिया। खपत बढ़ जाने से पेस्ट की बिक्री भी बढ़ गई।
4. (1) ग़लत (2) सही (3) ग़लत (4) सही (5) सही (6) ग़लत (7) ग़लत
5. आज हीरोलाल के पास तेरह मछलियाँ हैं।
6. करीम इस हिसाब से सौ पेजों में सैंतालीस चिट्ठियाँ ही लिख पाएगा।
7. आज से बीस साल पहले बूढ़े दादाजी की उम्र बड़ी फूफी की उम्र से 2.25 गुना ज़्यादा थी।

वर्ग पहेली 53 का हल

1 क	ला	2 का	3 र	■	4 अ	5 ल	ग	6 नी
ल	■	7 बा	सी	■	8 गा	त	■	र
9 मा	ला	■	10 द	म	ड़ी	■	11 अ	ब
■	■	12 सो	■	■	■	■	र्च	■
13 चो	14 र	चो	र	मी	से	रे	15 भा	ई
■	जी	■	■	■	■	ज़ा	■	■
16 मं	दा	■	17 न	वा	18 सा	■	19 ता	20 ब
ज़	■	21 धा	गा	■	22 ग	23 ऊ	■	सू
24 र	ज	वा	ड़ा	■	25 र	ब	वा	ला

वर्ग पहेली 53 का सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक है इस्माइल राही, जावरा, मन्दसौर; नाहिद खान, शाहरुक खान, आफ़रीन खान व मो. आलम खान, नर्मदानगर, खण्डवा, सभी म.प्र.। इन्हें तीन माह तक उपहार में चकमक भेजी जाएगी।



विजय राठौर, सातवीं, नौगाँव, धार, म.प्र.



विशाल एन. पाव, सातवीं, भावनगर, गुजरात

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/96



आवरण छायाचित्र : योशीकाजू शीराकावा, 'हिमालय' से साभार

नीरज बड़गैयाँ, पन्द्रह वर्ष, पथरिया, दमोह, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसैट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना